लङ्का टापूकी सैर ।

मूल्य =)

लङ्का टापूकी सैर।

"बैठकर सैर मुल्ककी करनी; यह तमाशा किताब में देखा।"

काशीनिवासी

बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्त लिखित।

जिसे

काशीस्थ "भारतजीवन प्रेस" के अध्यक्ष श्रीयुत बाबू रामकृष्णवर्म्माने निजव्यय से छपवाकर प्रकाशित किया।

॥ काशी ॥

भारतजीवन यन्त्रालयमें मुद्रित।

सन् १९०४ ई०

भूमिका।

इस पुस्तकका कुछ अंश हमने पहले "भारतजीवन" पत्रमें क्रमशः छपवाया था। अब, अनेक पाठकोंके अनुरोध से, सम्पूर्ण लेख पुस्तकाकारमें प्रकाशित किया जाता है।

(आषाढ़, सं० १९६१ वै०) गङ्गाप्रसाद गुप्त।
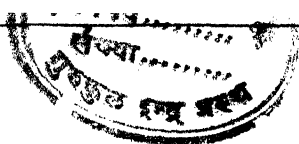
लङ्का टापूकी सैर।

॥ श्रीजानकीवल्लभो विजयते ॥

केकीकण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिन्हम्
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम्।
पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानम्
नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामम्॥

माननीय पाठकोंको विदित हो, कि समुद्रोंमें असंख्य द्वीप वर्त्तमान हैं; जिनमें बड़े बड़े मैदान, विकट वन, और ऊंचो ऊंचो पर्वतमालाएँ आदि अवस्थित हैं। इन द्वीपोंमें, लाखों करोड़ों मनुष्य, अनेक प्रकारसे उद्यम करके, अपना उदरपोषण करते हैं।

इन अगणित टापुओंमें प्रकृतिने इस विचित्रताके साथ मनोहर वस्तुएँ एकत्र की हैं, कि सहस्रों कोससे बहुत धन व्यय करके लोग इनके देखनेको जाते हैं, और एक एकमें वर्षों भ्रमण करते रहने पर भो, उनका जो नहीं भरता है।

इन द्वीपोंमें ऐसी ऐसी मनोहर छटाएँ दृष्टिगोचर होती हैं, और वे दर्शकोंके मनको इस प्रकार मुग्ध कर लेती हैं, कि सबको भूलकर उन (दर्शकों) को यही इच्छा होती है, कि जन्मभर इन्हीं स्थलोंमें विचरा करें।

प्रकृतिने इन द्वीपोंमें प्राय: विभिन्न भांतिकी विचित्रता उत्पन्न की है; अर्थात् किसीका जलवायु उत्तम है, किसीमें अन्नकी उपज बहुत होती है, किसीकी भूमिमें बहुमूल्य रत्न मिलते हैं, कहीं मोती निकाला जाता है, कोई व्यापारके लिये प्रसिद्ध है, और किसीकी सुरम्य नगरोंके देखनेके हेतु दूरदेशस्थ दर्शकगण दौड़ चले जाते हैं। तात्पर्य्य यह, कि प्रत्येक द्वीपमें भिन्न भिन्न भांतिकी अनोखी बातें दृष्टिगोचर होती हैं।

अनेक पुस्तकोंके देखनेके उपरान्त, तथा नाना देशमें स्वयं भ्रमण करनेके कारण, हमारी यह इच्छा हुई, कि हम अपने उन पाठकोंके मनोविनोद तथा कौतूहल-शान्तिके लिये, जो अपने देशसे कभी बाहर नहीं गये हैं, तथा व अद्भुत पदार्थोंसे भरे इस संसारमें जन्म पाकर यहांकी विचित्रता और रमणीयतासे पूर्णतया अनभिज्ञ हैं, कुछ समुद्रीय स्थलोंका वर्णन लिखें।

समुद्रीय स्थानोंमेंसे सबसे प्रथम लङ्काटापूका वृत्तान्त, जिसको अङ्गरेज सीलोन (Ceylon) कहते हैं, लिखा जाता है।

जानना चाहिये, कि जलसे चतुर्दिक् वेष्टित होनेके कारण इस द्वीपका आकार बादाम अथवा मनुष्यके हृदय के समान बना है; जिसका मोटा छोर दक्षिणकी ओर, और नोकदार उत्तरदिशा, अर्थात् भारतवर्षकी ओर है।

इस टापू और भारतवर्षके बीचमें छोटी छोटी अनेक पहाड़ियां स्थित हैं; जिनमेंसे कोई तो जलमग्न होगयी हैं, और कोई जलके ऊपर उभरी हुई इस प्रकार अवस्थित हैं, कि [illegible] देखनेसे ऐसा जान पड़ता है, कि हिन्दुस्थान और लङ्काके बीच, किसी समयमें स्थलमार्ग भी रहा होगा; किन्तु काल पाकर, कोई कोई वे पहाड़ी स्थान जो निचाईमें थे, जलके घटने बढ़ने और थपेड़ोंसे डूब गये हैं; तथा बहुतसे पर्वत ऊँचे होनेके कारण दिखाई देते हैं।

अहा! प्रकृतिने लङ्काको ऐसा हराभरा बनाया है, कि कुम्हलाया चित्त भी खिल उठता है, मनमें उत्तेजनाका प्रादुर्भाव होता है, और नेत्र ठण्डे होते हैं। रोगी भी यहां [illegible], थोड़ेही समय में रोगसे मुक्त [illegible] हृष्टपुष्ट हो जाता है।

यह टापू मानों प्राकृतिक शोभाका एक निरीक्षणालय है। अनेक पर्वत और मैदान ऐसे हैं, जो हरियालीसे ढँके हुए हैं। कदाचित्ही कोई ऐसा पर्वत हो, जो सूखा हो, नहीं तो समस्त वन और पहाड़ी स्थान हरेभरे तथा चित्ताकर्षक हैं।

किसी किसी पर्वतकी उपज काष्ठ है; और अनेक पर्वत चाय, काफी तथा खोपरे (नारियल) के वृक्षोंसे ढँके हुए हैं। अन्न इस देशमें बहुत न्यून उत्पन्न होता है; केवल कुछ स्थानोंमें चावलकी खेती होती है; अन्यथा, यहांकी हरियालीका प्रधान कारण, चाय और काफीकी वाटिकाएँही हैं।

इस देशकी चाय और काफी बहुतही उत्तम होती हैं। सन् १८६१ ई० में लङ्काकी उपजी हुई चाय, कोलम्बोके अजायबखानेमें रखी गयी है; जिसका मूल्य २५०) रु० प्रति पाउण्ड (रतल) लिखा है। विलायत जाकर यहांकी चाय बहुत महँगी बिकती है।

इस टापूमें अनेक बस्तियां हैं; जिनमें तामिल, चूली, सिंहली और डच जातिके मनुष्य बसते हैं। किसी किसी स्थानमें तीनों जातियां एकत्र रहती हैं, और कहीं कहीं प्रत्येक जातिका निवासस्थान पृथक् पृथक् है।

"चूली" मदरास-प्रदेश के आदिनिवासी हैं। ये लोग बहुत दिनोंसे लङ्कामें रहते हैं। बाल्यावस्थामें स्वधर्मशिक्षा के उपरान्त, इन लोगोंको अङ्गरेजी भाषा सिखायी जाती है; क्योंकि बिना अङ्गरेजी पढ़े, यहांके व्यापारादिका काम नहीं चल सकता है। यही कारण है, कि यहांका प्रत्येक वणिक् अङ्गरेजी भाषाका ज्ञाता होता है; परन्तु हर्षका

विषय है, कि इन लोगोंपर हमारे भारतीय युवकोंकी भांति, पाश्चात्य सभ्यताका प्रभाव नहीं पड़ा है; प्रत्युत ये पश्चिमी रीति नीतिके महान् विरोधी हैं।

चूलियोंकी पहचान यह है, कि उनका शिर मुड़ा होता है। उनकी टोपी, तुर्की टोपीके समान होती है; किन्तु उसमें फुंदने नहीं लगे रहते। वह टोपी लाल, काले तथा पीले रेशमसे बनायी जाती है। एक टोपीका मूल्य अधिकसे अधिक २०) रु० होता है; किन्तु देखनेमें वह २० पैसेकी भी नहीं जँचती। चूलियोंके गलेमें अङ्गरेजी ढङ्गकी कमीज (Shirt) रहती है, और उसके ऊपरसे लम्बा कुर्ता रहता है। वे लोग, धोती, मदरासियोंके ढंगपर पहनते हैं। उनकी स्त्रियोंका पहनावा मदरासी दक्षिणी ढंगकी चोली और साड़ीका है। उनके शरीरका रंग साधारणत: सांवला होता है।

"तामील" मदरास, त्रिचिनापल्ली और तीतूकोरिन प्रभृति स्थानोंके आदिनिवासी हैं। ये लोग हिन्दू हैं; किन्तु भारतकी रीति नीति और इनकी रीति नीतिमें बड़ा अन्तर है। इनमें अबतक संस्कृतके पठन पाठनकी प्रथा प्रचलित है। पहनावेमें ये केवल एक धोती रखते हैं; उसी-को आधी बांधकर आधी ओढ़ लेते हैं। इनके शिरके बाल बहुत बड़े होते हैं, और जूड़ा करके गर्दनपर बांध लिये जाते हैं।

इनमें कुछ लोग शिरको मुड़ा भी डालते हैं, और कोई कोई आधे शिरमें बाल रखते हैं। इनका रङ्ग सांवला होता है। अंगरेजीमें ये साधारणतः इतनी योग्यता रखते हैं, कि बातचीत भली भांति कर सकते हैं। इनका व्यवसाय, व्यापार और नौकरी है। प्रायः ये लोग सूदपर रुपयेका लेनदेन भी करते हैं।

"सिंहली"—यही लङ्काटापूकी प्राचीन जाति है। प्राचीन कालसे इसी जातिके राजा यहां राज्य करते थे। इनकी भाषा सिंहली है; जिसमें संस्कृतकी अधिक मिलावट है। इन लोगोंका रङ्ग सांवला हैं। इनमें किसीका शरीर सुडौल और किसीका बेडौल है। ये लोग बुद्ध धर्म्मके अनुयायी हैं। किसीके हाथका बनाया भोजन करनेमें ये दोष नहीं मानते; वरन् गाय बैल, बकरी, घोड़ा, कुत्ता, चूहा, बिल्ली प्रभृति सब प्रकारके पशु पची तथा मछलीकी जातिके समस्त जलपशुओंको बिना रोक टोक भक्षण करते हैं। इनलोगोंमें संस्कृतके बड़े बड़े विद्वान् हैं। प्रायः चीन, जापान, और ब्रह्मदेशसे लोग संस्कृत पढ़नेके लिये यहां आया करते हैं। ज्योतिषविद्यामें भी सिंहली दक्ष हैं। कुछ लोग वैद्यक-शास्त्रके भी ज्ञाता हैं।

इस जातिमें पुरुषका पहनावा यह है, कि वे शिरके बड़े बड़े बालोंका जूड़ा गर्दनपर बांध लेते हैं, और उसपर,

बिना मांग निकाले, एक अर्धचन्द्राकारवाली रबड़ अथवा सींगकी कंघी इस प्रकार जमाये रहते हैं, कि उसके दोनों किनारे, दोनों कनपटियों तक पहुँचे रहते हैं। शिरका शेष भाग खुला रहता है। ये लोग कुर्ती इतना ऊँचा पहनते हैं, कि जिससे चूतड़ भी पूरा पूरा नहीं छिप सकता। एक लपेटी हुई धोती पेटके ऊपरसे इतनी नीची पहनते हैं, कि पैर बिलकुल छिप जाते हैं। कमरके पास एक सुन्दर पेटी कस लेते हैं। इस धोतीके पहननेका निराला ढङ्ग है। परन्तु लङ्कामें ऐसीही परिपाटी है; इस कारण वह भद्दी नहीं लगती। ये धोतियां बहुत दामोंकी होती हैं, और प्रायः मदरासकी ओरसे बनकर आती हैं।

इनकी स्त्रियोंका पहनावा ऐसा है, कि उनका शिर बिलकुल नङ्गा रहता है। मांग निकालनेकी इस ओर चाल नहीं है। गलेमें वे किसी हलके कपड़ेकी इस प्रकारकी बांहदार सदरी पहनती हैं, जिसका गला बनियन(Banyan) की तरह चौड़ा रहता है; अथवा यह कहना चाहिये, कि जिस प्रकारका वस्त्र विलायती बीबियां रात्रिमें सोते समय पहनती हैं, उसी तरहकी यह बांहदार सदरी भी होती है।

इस जातिमें विवाहकी यह रीति है, कि जब दोनों ओरसे विवाहहोना निश्चित हो जाता है, तो वर और कन्या, दोनों अपने धर्म्मके बड़े मन्दिरमें जाकर विवाह करते

हैं। विवाहके दिन बिरादरीको अपने घर एकत्र कर लेते हैं। मंदिरतक पैदल जाया जाता है; क्योंकि गाड़ीकी सवारी शुभ नहीं समझी जाती। मन्दिरमें उनकी जातिका श्रेष्ठ गुरु, दुलहा और दुलहिनका हाथ मिलाकर, मंत्रोच्चारण करता है। बस यही विवाहका लक्षण है।

इस टापूमें अधिकतर असभ्य लोगोंका निवास होनेपर भी, एक अतीवोत्तम और प्राचीन प्रथा यह है, कि धनवान्से लेकर धनहीन तकमें पर्दा रहता है। किसी जातिकी कोई स्त्री—बालिका, नवयौवना, अथवा वृद्धा—बाहर फिरती दीख नहीं पड़ती। हां, जिनको भोजनका कहीं ठिकाना नहीं है, वे वृद्धा स्त्रियां बाहर घूम फिरकर मजदूरी करके पेट-पालन अवश्य करती हैं। ये बाहर फिरनेवालीवृद्धा स्त्रियां, काली तथा भद्दी आकृतिकी होती हैं।

सुनते हैं, कि सिंहली जातिके उन लोगोंकी स्त्रियां, जो वर्णसंकर नहीं हैं, बड़ी रूपवती हैं; वरन् भारतवर्षकी युवतियोंसे भी अधिक सुन्दरता उनमें विद्यमान है। हम नहीं जानते, कि यह दन्तकथा कहांतक सत्य हैं; क्योंकि पर्देका रिवाज होनेके कारण, वे बाहर नहीं निकलतीं; फलत: दृष्टिगोचर नहीं होतीं।

कोई यात्री, जबतक कि वह इस देशकी भाषाओंका ज्ञाता न हो, यहां आकर सुख नहीं पा सकता; अथवा यदि

वह अङ्गरेजी भाषा जानता हो, तौभी सब काम सहजमें निकल सकते हैं। अत: लङ्का, मलय द्वीप, सिङ्गापुर प्रभृति टापुओंको ओर जानेवाले मनुष्योंको उचित है, कि वे पहले वहांकी भाषाओं (तामिल, सिङ्गली, मलाई, अङ्गरेजी इत्यादि) को सीख लें, अथवा किसी जानकार व्यक्तिको अपने साथमें ले लें, तब जाने का विचार करें। लङ्कामें अङ्गरेजीकी इतनी अधिकता है, कि कुली, मजदूर, धोबी, हज्जाम, गाड़ीवान्, दूकानदार आदि सब अङ्गरेजीमें बातचीत करते हैं।

चावल, मछली, नारियल, जङ्गली फल इत्यादि लङ्काकी खाद्यवस्तु हैं। बहुतसे ऐसे जङ्गली पदार्थ यहांके बाजारोंमें बिकते दिखाई देते हैं, जिनके नाम न तो बेचनेवाले जानते हैं, न खरीदनेवाले; किन्तु खाये सब जाते हैं।

लङ्काटापूमें कई बड़ी बड़ी बस्तियां हैं; जहांका जलवायु भारतवर्षके प्रसिद्ध प्रसिद्ध स्थानोंसे भी उत्तम है। उनका हाल आगे चलकर लिखा जायगा।

यहांके लोगोंमें एक यह भी रीति है, कि जब नवविवाहिता बालिका प्रथमबार रजस्वला होती है, तो बड़ा हर्ष मनाया जाता है, इष्ट मित्र एकत्र होते हैं, गान वाद्य होता है, बिरादरीको भोज दिया जाता है; और जब वह तीन दिनके पश्चात् स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण करती

है, तो अपने चाचा मामा आदि बड़े लोगोंके निकट जा-कर उनको प्रणाम करती है। वे लोग उसको आशीर्वाद देनेके व्यतिरिक्त कुछ रुपया भी देते हैं; किन्तु जबतक लड़की रजस्वला रहती है, तबतक किसी पुरुषके साम्हने नहीं जाने पाती। यह प्रथा तामिल, चूली, सिंहली आदि लङ्काकी सब जातियोंमें प्रचलित है।

लङ्काटापूमें अङ्गरेजोंसे पहले डच लोगोंका राज्य था। उनके अनेक चिन्ह और स्थान स्थान पर बने हुए दुर्ग अ-बलों वर्त्तमान हैं।

इस देशमें समथल भूमि बहुत कम है; किन्तु अधिक-तर पहाड़ी भूमि है। नीची ऊँची पर्वतमालाओंके टीले, हरेभरे वृक्षोंसे ढँके हुए बहुतही बहारदार दिखाई देते हैं। कोई शुष्क स्थान दृष्टिगोचर नहीं होता। जहां देखो, चाय और काफीकी वाटिकाएँ हरियालीसे लहलहा रही हैं। जिस ओर दृष्टि उठती है, वहीं हरा हरा जङ्गल, और नारियलके वृक्षोंके बन, दर्शकोंके मनको मोहे लेते हैं। चाय और काफीकी वाटिकाओंके कारण समस्त पर्वतोंपर जगह जगह सुन्दर अङ्गरेजी बंगले बने हुए हैं। सहस्रों झ-रने झर रहे हैं; जिनसे पृथिवी ठंडी रहती है। ऊँचे नीचे स्थानोंमें अनेक नहरें काटकर निकाली गयी हैं; जिनके का-रण जलकी कमी किसी जगह नहीं रहती। झरनोंका जल

स्वच्छ, हलका, मीठा, और स्वास्थ्यकर होता है। अङ्गरेजोंने सैकड़ों स्थानोंमें पनचक्कियां बनवायी हैं; जिनके द्वारा बहुतसे काम निकलते हैं। एक एक पनचक्की सैकड़ों मजदूरोंका काम करती है।

एक तो प्राकृतिक झरनों और मनुष्योंद्वारा काटी हुई नहरोंसे पृथ्वी ठण्डी रहतीही है; दूसरे ऐसा कोई महीना नहीं बीतता, जिसमें दो चार बेर अच्छी वृष्टि न होजाती हो। वृष्टिके साथ साथ जिस समय बिजुली चमकने लगती है, उस समय यह सवैया याद आती है—

सवैया।

नाच रही दिखलाय मनों यह,
आज सजी बरसा ऋतु यामिनी।
बादर मंजु मृदंग बजाय,
रही बरसा गति गाय सुभामिनी॥
यों छनहीं छनहीं छितिलों,
छनदोपति फैलि रही अविरामिनी।
चंचल चारु मनोगति गामिनी,
नाच रही यह दामिनी कामिनी॥

अहो! ये सब उसी परमात्माकी अद्भुत लीलाएँ हैं, कि जिस ओर आंख उठाकर हम देखते हैं, उसी ओर मनो-हारिणी छटा दृष्टिगोचर होती है,—

छटा औरही भांतिकी देखते हैं,
जहां दृष्टि हैं डालते, फेरकर मुंह ।
कहीं छन्द सुनते, कहीं देखते हैं,
कहीं कोकिलोंकी मनोहर कुहूकुह ॥ १ ॥
कहीं आम बौरे, कहीं डालियोंके
तले फूल आकर, गिरे बीच थाले ।
रखे हैं मनों टोकरे मालियोंके;
इकट्ठे जहां भौंरसे भौरवाले ॥ २ ॥
कभी व्योममें सांझकी लालिमा है;
कभी आकाशको स्वच्छ पाते हैं हम ।
कभी रात्रिमें मेघकी कालिमा है;
कभी चन्द्रिका देख, पछताते हैं हम ॥ ३ ॥
कभी इन्द्रका चाप है सप्तरङ्गी,
जहां ज्योतिके संग बूंदी घनी है ।
कुसुम्भी, हरा, लाल, नीला, नरङ्गी,
कहीं पीत शोभा, कहीं बैंगनी है ॥ ४ ॥
कहीं ह्वेलसे जीव हैं दृष्टि आते,
कहीं सूक्ष्म कीटादिकी पंक्तियां हैं ।
उन्हें देखकर चित्त हैं चित्त खाते,
इन्हें देखनेकी नहीं शक्तियां हैं ॥ ५ ॥
कहीं पर्वतोंसे नदी बह रही है,

कहीं वाटिकामें बनी स्वच्छ नहरें।
कहीं प्राकृतिक कोर्त्तिको कह रही हैं,
छटाधीश वारीशकी अंक लहरें॥ ६॥
कहीं पेड़की पत्तियां हिल रही हैं,
कहीं भूमिपर घासही छा रही है।
सुगन्धें कहीं वायुमें मिल रही हैं,
कहीं सारिका प्रेमसे गा रही है॥ ७॥
कहीं पर्वतोंकी छटा है निराली,
जहां वृक्षके वृन्द छाये घने हैं।
लगी एकसे एक प्रत्येक डाली,
मनों पान्थके हेतु तम्बू तने हैं॥ ८॥
कहीं दौड़ते झाड़ियों बीच हर्नें,
लिये मोदसे शावकोंको भगे हैं।
कहीं भूधरोंसे झरें रम्य झर्नें;
अहा! दृश्य कैसे अनूठे लगे हैं॥ ९॥
कहीं खेतके खेत लहरा रहे हैं;
प्रसन्नात्मा हैं कृषीकार सारे।
उन्हें देखकर मूंछ फहरा रहे हैं,
सदा घूमते कांध पर लठ्ठ धारे॥ १०॥
अनोखी कला सच्चिदानन्दकी है;
उसीकी सभी वस्तुमें एक सत्ता।

अहो! कौमुदी यह उसी चन्द्रकी है,
किया जिसने संयुक्त है पेड़ पत्ता ॥ ११ ॥
उसीकी प्रभासे प्रकाशित हुए हैं,
लतायुक्त संसारके वृक्ष सारे।
उठे शृङ्ग आकाश मानों छुए हैं;
जहां हैं चमकते अनेकों सितारे ॥ १२ ॥
जहां ध्यान देते हैं चारों दिशामें,
पड़े दीख संसार नियमानुसारे।
सदा चन्द्र आनन्ददाता निशामें,
सदा सूर्य्य अपना उजेला पसारे ॥ १३ ॥
समैपर सदा फूल भी फूलते हैं;
उसी भांति वृक्षोंमें फल भी लगे हैं।
नहीं कौन सौंदर्य्य पर भूलते हैं,
नहीं कौनके चित्त उनपर डगे हैं ॥ १४ ॥
समैसे सदा मेघ भी बर्सते हैं,
शिखण्डी सभी पंखको खोलते हैं।
घटा देखकर बूंदको तर्सते हैं,
पपीहा तभी कण्ठसे बोलते हैं ॥ १५ ॥
अचम्भा सभी वस्तु संसारकी है;
वृथा दर्प विज्ञानका ठानता है।
व वागीशने सृष्टि विस्तार की है;
वही एक सब मर्मको जानता है ॥ १६ ॥

कई अङ्गरेज यात्रियोंने काश्मीरकी उपमा स्वर्गसे दी है; किन्तु कदाचित् उन महानुभावोंके कानतक लङ्का की रमणीयताका वृत्तान्त नहीं पहुँचा था। राम राम! लङ्का काश्मीरसे अनेक बातोंमें बढ़कर है। प्रथम तो यह, कि काश्मीरमें सर्दी बहुत पड़ती है; दूसरे वहां सालमें एकबार बसन्त ऋतु आती है; किन्तु लङ्कामें सदैव हरियाली रहती है, और जलवायु प्राय: सब ऋतुओंमें एक समान रहता है;—किसी ऋतुमें वृक्षोंके पत्ते नहीं झड़ते हैं। समग्र सीलोन सदा हरा भरा रहता है। गर्मीकी ऋतुमें समुद्रके किनारे किसी किसी जगह थोड़ी देरके लिये सूर्य्य भगवान्की किरणें असह्य हो जाती हैं; किन्तु तुरन्तही शीतल समीरण उस गर्मीको दूर कर देता है। कहीं कहीं ठण्डे पहाड़ भी हैं; जिनपर रहनेवाले मनुष्योंको सब ऋतुओंमें कुछ गर्म वस्त्रका पहनना आवश्यकीय होता है। कोलम्बो और गालीमें सर्दी बिलकुल नहीं पड़ती, वरन् भारतवर्षकी तरह वहां भी गर्मी पड़ती है; किन्तु लूह नहीं चलती।

इस टापूके किसी नगरमें अच्छी इमारतें नहीं हैं। अलबत्ता गाली और कोलम्बोमें सर्कारी और दो चार अन्य इमारतें देखनेयोग्य हैं। सर्वसाधारणके मकान दुमञ्जिले और छोटे हैं। सब इमारतोंके ऊपर खपरैल है; क्योंकि यहां वृष्टि अधिक होती है।

लङ्का टापूकी उपज, नारियल, चाय, काफी, दारचीनी, जायफल, छोटी इलायची, काली मिर्च, मोती, पन्ना, नीलम, पुखराज, और तामड़ा इत्यादि है।

यहां किसी प्रकारका टिकस अथवा महसूल (भारतवर्षके इनकम टिकस इत्यादिकी नाईं) नहीं लगता। हां, १८ वर्षसे अधिक और ५० वर्षसे कम उमरवाले पुरुषपर २) रु० वार्षिक टिकस लगता है; और किसी प्रकारका महसूल किसीको नहीं देना पड़ता। एक वार सीलोनकी गवर्नमेण्टने नारियलके वृक्षोंपर प्रति वृक्ष केवल १ सेण्ट लगाना चाहा था (एक रुपयेके १०० सेण्ट होते हैं) इसपर सब जातिके धनवान् और धनहीनने एकमत होकर उस नये टिकसका विरोध किया। निदान सब जातियोंकी एक राय होनेके कारण, वह नया कानून बदल दिया गया। बड़े खेदकी बात है, कि हिंदुस्थानकी प्रजा ऐसी बुद्धिहीन है, कि जान बूझकर एक दूसरी जातिकी खराबी सर्कारके हाथसे कराती है, जिससे वह अपनी हानि भी करती है, और दूसरेकी भी। यहांवालोंको लङ्काके जङ्गली लोगोंसे एकताकी शिक्षा लेनी चाहिये। यद्यपि लङ्कामें भी तीनों जातियोंमें वैमनस्य है, किन्तु सर्कारके मुकाबिलेमें सारा देश एक हो जाता है। वह सर्वव्यापी परमेश्वर भारतवर्षमें ऐक्यवृक्ष उत्पन्न करे, और अहङ्कारी मनुष्योंको सुबुद्धि दे।

लङ्का टापूमें एक प्रान्त "एण्डाकोड़े" के नामसे प्रसिद्ध है। इस प्रान्तमें बड़े बड़े जङ्गल हैं; जिनमें नरहिंसक पशु और हाथी इत्यादि अधिकतासे निवास करते हैं। इस प्रान्तमें दूर दूर पर चूली जातिके मनुष्योंकी बस्ती है। ये मनुष्य उजड्ड और गँवार हैं। इस प्रान्तमें कोई सर्कारी आफिस या कचहरी अथवा पुलिस इत्यादि नहीं है। उन्हींमें कुछ लोग सर्दार हैं; जो सर्कारी पुलिसका अधिकार नहीं होने देते;—कहते हैं, कि यहां पुलिसके प्रबन्धकी कोई आवश्यकता नहीं है। उनका सबसे बड़ा सर्दार, प्रति शुक्रवारको, हर प्रकारके मुकद्दमोंका न्याय, कर देता है। सर्दारकी आज्ञा भङ्ग करनेका किसीको अधिकार नहीं है। बस नियत "कर" एकत्रित करके लोग गवर्नमेण्टको दे देते हैं। सर्कारने उसी प्रान्तके एक स्थानमें कचहरी इत्यादि बनवायी हैं; किन्तु सब व्यर्थ है।

एण्डाकोड़ेके समीपही एक स्थान हिन्दराज कोड़ेके नामसे प्रसिद्ध है; जिसको लङ्कावाले रावणका निवासस्थान बतलाते हैं। इस जगह टूटे फूटे किले और पुराने जलाशयादि दृष्टिगोचर होते हैं। प्रति वर्ष नियत समयपर मेला लगता है। यह स्थान लङ्काद्वीपकी दक्षिणीय सीमा पर अवस्थित है।

प्रसिद्ध है, कि लङ्काके पहाड़ोंमें अनेक आश्चर्य्ययुक्त स्थान

देखे गये हैं; किन्तु वे बातें भङ्गड़ोंकी निरी गप मालूम पड़ती हैं। कहते हैं, कि एक पवित्र पर्वतमें अनेकों बड़ी बड़ी कन्दराएँ हैं; जिनमेंसे एकके अन्दरसे मक्केको रास्ता जाता है; दूसरी राहसे मनुष्य काश्मीरमें पहुँच सकता है; और तीसरेमें द्रव्य है, इत्यादि इत्यादि। ये बातें झूठी हैं। वक्तव्य यह है, कि उस स्थानपर बस्ती बहुत कम और जङ्गल अधिक है। बन भी अत्यन्त घना और दुर्गम है। मनुष्य-भक्षक पशु वहां अधिकतासे पाये जाते हैं। प्राय: लोग कमरमें रस्सियां बांध और रोशनी लेकर उन कन्दराओंमें घुसते हैं; किन्तु थोड़ी दूर जाकर वे बन्द पायी जाती हैं। ऐसा जान पड़ता है, कि वृष्टिकी प्रबलताके कारण पहाड़की जड़ोंसे मिट्टी निकल गयी है, और पृथिवी गहरी हो गयी है। अन्धियारीके कारण लोग अनुमान करते हैं, कि इनके भीतर कहींको रास्ता गया है।

लङ्कामें रहनेवाले अरब लोग, जिनका काम समुद्रमें गोते लगाकर मोती इत्यादि निकालना है, कहते हैं, कि "प्राय: समुद्रमें जलके मनुष्य देखे जाते हैं। वे ८।१० हाथकी अन्तरपर दीख पड़ते हैं; किन्तु जब उनके पकड़नेका प्रयत्न किया जाता है, तो वे तुरन्त भाग जाते हैं, और किसी प्रकार हमारे हाथ नहीं लगते। उनका रंग सांवला, चेहरा गोल, शरीर सुडौल, कद नाटा, शिरके बाल लाल, और

शरीरका आकार मनुष्यके समान होता है।" यह बात अरबोंके अतिरिक्त और किसीके मुंहसे नहीं सुननेमें आती, इसलिये इसपर विश्वास नहीं किया जा सकता। यहां समुद्रोंमें छोटे बड़े शंख बहुत मिलते हैं, और राजशंख भी प्राप्त होता है, जिसका मूल्य अधिक होता है।

प्रायः प्राचीन यात्री, अपनी यात्रापुस्तकोंमें, लङ्काके वृत्तान्तके साथ साथ अनेक आश्चर्ययुक्त बातोंका उल्लेख कर गये हैं। एक लेखक लिखता है,—"यहां चन्दन इतना उत्पन्न होता है,कि जलानेकी लकड़ियां भी श्वेत चन्दनकी होती हैं,और सब कामोंमें चन्दनकी लकड़ी खर्च की जाती है।" उसी लेखकने आगे चलकर लिखा है, कि "मकानोंमें भी चन्दनहीकी लकड़ीसे काम लिया जाता है।" यह बात एकबारही निर्मूल जान पड़ती है; क्योंकि लङ्काके अत्यन्त प्राचीन मकानोंमें भी एक फुट चन्दनका काष्ठ नहीं दीख पड़ता। अलबत्ता बढ़हलकी लकड़ी अधिकतासे उत्पन्न होती है,और प्रायः मकान तथा टेबुल, कुर्सी, सन्दूक इत्यादि भी उसीके बनाये जाते हैं। उसमें किसी प्रकार की सुगन्धि नहीं होती। हां, उसका रंग किञ्चित् पीला होता है, और वह बहुत चिकनी होती है।

इस टापूमें अनेकानेक बस्तियां है। प्रायः बड़ी भी हैं; किन्तु छोटी तो बहुत हैं। यदि दो अथवा तीन वर्षतक

पैदल फिरा जाय, तो कदाचित् पूरा पूरा हाल मालूम हो सके ।

“ चाय ”

लङ्काकी मुख्य उत्पत्ति चाय है, जो अधिकतासे उत्पन्न होती है । इसका पेड़ लाल मिर्चके पेड़के समान, किन्तु अति गुञ्जान होता है, और मेंहदीकी तरह उसमें बहुतसी डालियां होती हैं । पत्ती भी मिर्चकी पत्तीके बराबर होती है; परन्तु उसका रंग हरा काला होता है । एक वृक्ष कई कई वर्षतक रहता है । इसके वृक्षको ऊपरसे छांटते रहते हैं, ताकि फैलावट अधिक हो, और उंचाई कम । इसके बगीचे ऐसे दीख पड़ते है, जैसे आलूके खेत; किन्तु आलू नाली खोद कर लगाया जाता है, और यह संस्कृत भूमिपर । वर्षा ऋतु के प्रारम्भमें इसका वृक्ष लगाया जाता है, और इसको तरीकी विशेष आवश्यकता होती है; परन्तु पानीका इसकी जड़में एकत्रित रहना इसके लिये हानिकारक होता है । प्रायः ढालुईं भूमि इसके लिये उत्तम होती है; समथल भूमिमें भी जलके निकलनेका प्रबन्ध कर देते हैं ।

चायकी पत्तियां सदैव निकलती रहती हैं । हर दूसरे महीने कतर ली जाती हैं । असंख्य मनुष्य इसके बगीचोंमें काम करते रहते हैं; और एक एक पत्ती इस ढंगसे वृक्षोंसे तोड़ते हैं, कि सब पत्तियां बराबर उमरकी जान पड़ती हैं ।

जितनी पत्तियां तोड़ी जाती हैं, उतनीही उत्पन्न होती जाती हैं।

इसके तय्यार करनेकी यह रीति है, कि पत्तियोंको एकत्रित करके एक दो दिन तक छांहमें सुखाते हैं; पश्चात् उसमें गर्मी पहुँचाते हैं। इस कामके लिये एक मकान बना रहता है। उस मकानको कोयला इत्यादि सुलगाकर खूब गर्म करते हैं। इसके बाद, छतसे कुछ नीचे और जमीनसे ऊपर, मोटा कपड़ा तान देते हैं। उस कपड़ेपर छायेकी सूखी कोमल पत्तियां फैलायी जाती हैं, और नियमित समय तक उनमें नीचेसे हलकी आंच देकर गर्मी पहुँचायी जाती है—तब वे सिकुड़कर कड़ी हो जाती हैं। इसके अनन्तर, डब्बोंमें भरी जाकर, बाजारोंमें बिकनेको आती हैं। चायमें जो सुगन्धि होती है, वह उसी गर्मीके कारण आती है; यदि उस रीतिसे गर्मी न पहुँचायी जाय, तो वह सुगन्धिमयी नहीं हो सकती। सीलोनमें काली चाय उत्पन्न होती है। प्रायः चाय गर्म करनेके मकानोंमें इञ्जिनसे भी काम लेते हैं।

"काफी"

काफी (Coffee) का वृक्ष कनेरके वृक्षके समान बड़ा होता है। इसके पत्ते अमरूदके पत्तों जैसे, किन्तु कोमल होते हैं। इस पेड़की लम्बी लम्बी डालियां भूमि अथवा पेड़की जड़से निकलकर चारों ओर फैल जाती हैं। इसका बीज सूखी

पर लाल होता है। बीजके ऊपर पिस्तेकी तरह लाल रंग का एक कठोर छिलका रहता है; जिसको तोड़नेसे "काफी" निकलती है। जिस प्रकार नीमके पेड़में "निमकौड़ियां" फलती हैं, अथवा गोंदनीमें गोंदनियां, उसी प्रकार इसके पत्ते भी होते हैं; किन्तु प्रायः पत्तोंकी जड़ोंमें गूलरकी तरह भी यह फलती है।

इसका पेड़ भी कई वर्षतक रहता है। काफी और चाय के वृक्षोंमें सदैव हड्डीका खाद दिया जाता है; इससे उनकी अधिक उपज होती है। वर्ष भरमें एकबेर "काफी" तोड़ी जाती है।

इस देशमें दारचीनीका आपही आप उगनेवाला वृक्ष वनोंमें उत्पन्न होता है। यह पेड़ कनेरकी तरह बड़ा होता है, और इसके पत्ते भी वैसेही लम्बे और कठोर होते हैं। भूमि पर फैलता हुआ इसका वृक्ष बढ़ता है, और ज्यों ज्यों वह बढ़ता जाता है, त्यों ही त्यों डालियोंका छिलका फटता जाता, तथा नया छिलका भीतरसे आता जाता है। वही फटा हुआ छिलका "दारचीनी" के नामसे बेंचा जाता है।

छोटी इलाइचीका पेड़ जमीनसे छादा बांधे पैदा होता है। वह बहुत ऊंचा नहीं होता। उसके पत्ते उस तरहके होते हैं, जैसे अङ्गरेजी बागोंमें बड़े बड़े पत्तोंका वह वृक्ष होता है, जिसके पत्तोंमें इलायचीकी महक निकलती है।

वास्तवमें वह इलायचीका पेड़ नहीं है; किन्तु ठीक वैसाही जान पड़ता है। पेड़की जड़में इलायचीके गुच्छे उत्पन्न होते हैं, और भूमिपर पड़े पड़े सूखते हैं। उन्हींमेंसे इलायची निकलती है।

"नारजील"—(नारियल वा खोपरा) इसका पेड़ ताड़के पेड़के समान ऊंचा होता है। वर्ष भरमें तीनबार, किसी किसी स्थानमें चारबार, नारियल, वृक्षमें फलता है। जिस प्रकार खजूरके पेड़में गुच्छे बहुत होते हैं, उसी प्रकार नारियल भी अधिकतासे उत्पन्न होता है। एक पेड़से साल भरमें प्रायः एक सौ नारियल मिलते हैं। फिर फलके ऊपरका छिलका भी कामहीमें आता है; प्रायः उसको बटकर लोग रस्सियां बनाते हैं। किसी किसी जगह वह जलानेके काममें भी आता है। ऊपरी छिलकेके नीचे जो कड़ा द्रव्य निकलता है, वह भी जलानेके काममें आता है। उसके भीतर खोपरा निकलता है। लङ्कावाले बड़े यत्नसे मेवेके पेड़ोंकी तरह इसके पेड़को पालते हैं। खोपरा, लङ्कामें बड़ी आयकी वस्तु है।

जङ्गली बादाम भी लङ्का टापूमें अधिकतासे उत्पन्न होता है; किन्तु, कड़ुआ होनेके कारण, वह किसी काममें नहीं आता।

अखरोट भी पाये जाते हैं; किन्तु कम। बादाम और

अखरोटका पेड़ एकही तरहका होता है। दोनोंके पत्ते, लकड़ी और पेड़की बनावट आदि सभी बातें, गूलरके पेड़की तरह होती हैं; और बादाम तथा अखरोट उसी प्रकार वृक्षमें उत्पन्न होते हैं; जिस प्रकार गूलरके पेड़में गूलर।

अनानास भी लङ्का टापूमें बहुत होता है; बल्कि वहां इसकी खेती होती है। सहस्रों मनुष्य इसीकी खेतीसे अपना पेट पालन करते हैं।

अन्न लङ्कामें अधिकतर हिन्दुस्थानसे जाता है, जिससे वहांवाले बहुत लाभ उठाते हैं। बङ्गालप्रदेशसे चावल बहुत जाता है।

"कालीमिर्च"—कालीमिर्चकी एक लता होती है, जो प्राय: नारियलके वृक्षोंपर फैलती है। इसके पत्ते उस तरहके होते हैं, जैसे चौड़े पत्तेका "इश्कपेचा"। इसके फल के ऊपर कोई दूसरा छिलका नहीं होता; बस फल सूख-कर कालीमिर्चके नामसे प्रसिद्ध होता है।

इस देशका मुर्ग बहुत बड़ा, बलवान् और लड़नेवाला होता है। साधारणत: यहांके मुर्ग लाल रंगके होते हैं। लङ्कामें मुर्गोंकी लड़ाईके बहुत लोग शौकीन हैं। अधिक मूल्य देकर खरीदके पालते हैं। पीछे दो हजार, कभी कभी दस हजारकी बाजी लगाकर लड़ाते हैं। ये मुर्ग हिन्दुस्थानकी औसत् दर्जेकी बकरीके बराबर होते हैं!

"हाथी"

लङ्कामें बड़े बड़े पहाड़ी प्रदेश और जङ्गल हैं, जो गुञ्जान पेड़ों और हरी हरी घाससे आच्छादित हैं। उनमें प्राय: भयानक जातिके नरहिंसक जन्तु पाये जाते हैं। वहां शेर नहीं हैं; किन्तु शेरसे छोटा जानवर, जिसको हिन्दुस्थानमें "भगरा" कहते हैं, बहुत है। रीछ भी पाया जाता है। अन्य पशुओंके सिवा, वह विकटाकार पशु भी वहां होता है, जो "हाथी" के नामसे विख्यात है।

लङ्कामें हाथीके बहुतेरे बन हैं; किन्तु सब जगह अच्छे और प्रशंसनीय हाथी नहीं मिलते; अत: सौदागर लोग यहांके साधारण जङ्गलोंमेंसे हाथी नहीं पकड़ते।

"मिन्नार खाड़ी" नामक वनमें बहुत अच्छे हाथी मिलते हैं। इस जङ्गलका हाथी बहुत बड़ा, बलिष्ठ, सुन्दर, ऊँची छाती और चौड़े ललाटका, हिन्दुस्थानी राजाओं और नव्वाबोंकी सवारीके योग्य होता है। दूर देशस्थ व्यापारीगण लङ्कामें आते हैं, और यहांसे हाथी ले जाकर लाभ उठाते हैं।

पूर्व्वमें ऐसा नियम था, कि जो कोई चाहता वही हाथी पकड़ सकता था; किसी प्रकारकी रोकटोक नहीं थी; किन्तु कुछ दिन पीछे यह नियम प्रस्तारित हुआ, कि हाथी पकड़नेके लिये लाइसेन्स (License) अर्थात् सर्कारी

हुक्मनामा ले लेना आवश्यक है। उसके लिये दश रुपया फीस नियत हुई। बहुत दिनों तक यही नियम रहा; परन्तु अब यह आज्ञा है, कि सभी लोगोंको हाथी पकड़नेका लाइसेन्स नहीं दिया जायगा; किन्तु भारतवर्षके केवल वेही बड़े बड़े सौदागर लाइसेन्स पा सकेंगे, जो पहलेसे यहां आते हैं, और जिनका यही उद्यम है, तथा जिनके नाम सर्कारी रजिष्टरमें लिखे हुए हैं। वेही लाइसेन्स पानेके अधिकारी समझे गये हैं; सो भी केवल इस कारण, कि वे बहुत सा रुपया व्यय करके दूर दूरसे आते हैं; अतः उन्हींको हाथी पकड़नेकी सर्कारी अनुमति है; किन्तु लाइसेन्स पानेके लिये अब उनको पचीस रुपया देना पड़ता है।

सौदागर लोग लङ्काकी राजधानी "कोलम्बो" से आज्ञापत्र (License) लेकर हाथियोंके जङ्गलको जाते हैं। वहां एक जातिके मनुष्य बसते हैं, जो हाथी पकड़ते हैं। सौदागर जब वहां जाते हैं, तो उस जातिके सर्दारसे अपनी इच्छा प्रकट करते हैं, कि हमको एक दो या चार (जितनेका आज्ञापत्र मिला हो) हाथी चाहियें। उस जातिके मनुष्योंके सिवा, और कोई जाति यह काम नहीं कर सकती। यह भी स्मरण रखने योग्य बात है, कि छोटे बच्चोंके पकड़नेका हुक्म है; बड़ोंको कोई नहीं पकड़ने पाता। अस्तु, इस जातिका सर्दार, सौदागरसे अपनी मजदूरी ठीक कर

लेता है। यह भी ध्यान रखना चाहिये, कि प्रत्येक हाथीके लिये अधिकसे अधिक एक सौ रुपया उस सर्दारको देना पड़ता है; इससे अधिक नहीं। सौदागर उस सर्दारको यह भी समझा देता है, कि हमको नर हाथीकी आवश्यकता है अथवा मादाकी। कहनेका अभिप्राय यह है, कि जिस प्रकारके हाथीकी आवश्यकता होती है, वे परस्पर बातचीत करके ते कर लेते हैं, और आधा रुपया पहलेही दे दिया जाता है। सौदागर उसी बस्तीमें ठहरता है, और हाथी पकड़नेवाली जातिके लोग, अपने सर्दारके साथ जङ्गलमें जाते हैं। वे अपने साथ बहुत तरहकी पतली मोटी रस्सियां, सिकड़, और एक प्रकारकी छालके बने फन्दे भी ले जाते हैं।

जङ्गलमें हाथियोंका यह नियम है, कि छोटे छोटे मैदानोंमें बहुत बहुतसे हाथी एकत्रित होकर चरते हैं। जब हाथी पकड़नेवाले लोगोंको मालूम होता है, कि अमुक दलमें वह हाथी है, जिसकी हमको आवश्यकता है, तो वे हाथियोंकी दृष्टि बचाकर, वृक्षोंकी आड़ पकड़े हुए, उस झुण्डके साथ हो जाते हैं। यदि अवसर नहीं मिलता, तो कई कई दिन बीत जाते हैं; परन्तु वे पीछा नहीं छोड़ते। निदान पौ फटनेके समय जब नींदकी झोंकमें सब हाथी एक दूसरेसे अलग हो जाते हैं, और पकड़नेवाले लोगोंको मालूम हो जाता है, कि वह हाथी जिसकी हमें आवश्यकता है, अन्य

हाथियोंसे पृथक् हो गया है, तो उसको घास चरनेमें लिप्त देखकर बड़ी फुर्तीसे घासमें छिपकर दो चार आदमी उसके पिछले पांवोंमें फन्दे बांध देते हैं, और फन्देका दूसरा सिरा आसपासके किसी पेड़के साथ मजबूतीसे बांधकर बहुतसी बन्दूकें छोड़ते हैं; जिससे सबकी सब हाथी भयभीत हो, वहांसे भाग जाते हैं; केवल वही एक बंधा रह जाता है। फन्दा बांधनेमें ये लोग बड़ी चतुराई करते हैं। बड़ी बड़ी घासमें छिपकर यह काम करते हैं, और हाथी यह समझकर, कि घासकी रगड़ है, भागता भी नहीं!

पीछे मैदान खाली देखकर मोटे मोटे रस्सोंसे खूब बांधकर, हाथीके पैरोंमें बेड़ियां डाल देते हैं। तब हाथी पकड़नेवाले लोगोंका सर्दार कुछ मन्त्र पढ़कर हाथीपर फूंकता है, और जल फूंककर जङ्गलमें चारों ओर छिड़क देता है। इसके अनन्तर जङ्गलके सर्कारी मैनेजरको सूचना दी जाती है; जिसका कोई कर्म्मचारी, जो उस काम पर नियुक्त रहता है, आकर हाथीको देखता है, कि वह कानूनके अनुसार है अथवा नहीं। यदि है, तो अनुमति प्रकाश करके वह चला जाता है। इसके पश्चात् उस हाथीको सौदागर भी पसन्द करता है। फिर वह सर्दार एक बकरीकी बलि चढ़ाकर, परस्पर बांट लेता है, और उस समय फिर कुछ मन्त्रोच्चारण करता है, जो उसकी जातिमें प्रारम्भसे होता आया है। फिर वेही

लोग उस हाथीको अपनी बस्तीमें लाकर सौदागरको सौंप देते हैं। यदि बस्तीमें आते आते हाथी मर जाय, तो सौदागरको उससे कोई सम्बन्ध नहीं है; वे लोग उसको दूसरा हाथी पकड़ देंगे। हां, यदि बस्तीमें बांध देनेके पीछे मरे, तो सौदागरको हानि है। तदुपरान्त वह सौदागर हाथी को किसी किसी प्रकार परचा लेता है, और जहाज पर चढ़ा, हिन्दुस्थानके किसी बन्दरगाहसे (जहां उसकी इच्छा हो) उतार कर ले जाता है, और बेचकर लाभ उठाता है।

लङ्कामें यह नियम है, कि जब नया गवनर आता है, तो वह अपनी गवर्नरीके समयमें कभी न कभी हाथीकी सैर अवश्य करता है। इस सैरके लिये जङ्गलमें एक सैरगाह बनायी गयी है, जो बहुत दिनोंसे इसी कामके लिये नियत है। अर्थात् कुछ पहाड़ ऐसे स्थित हैं, जैसे किसी मकान की चहारदीवारी (Sorounding) होती है। बीचमें बहुत बड़ा मैदान बना है। उस मैदानमेंसे वृक्षोंको काटकर बड़ी बड़ी घास रहने देते हैं। मैदानके किसी किसी ओर तो ऊँचे ऊँचे पहाड़ हैं, और जिधर पहाड़ नहीं हैं, उधर बड़े बड़े वृक्षों और वृक्षोंके साथही गुञ्जान गुञ्जान बांसोंकी दीवार खड़ी की गयी है। उस मैदानमें आने जानेके लिये केवल दोही मार्ग हैं; जिनमें द्वारकी भांति बड़े बड़े फाटक लगाये गये हैं।

जब गवर्नरको सैर करनेकी इच्छा होती है, तो वह अन्य यूरोपियन अफसरोंके साथ वहां जाता है, और उन ऊँचे ऊँचे पहाड़ोंपर बहुतसे बङ्गलोंमें सब दर्शक इकट्ठे होते हैं। हाथियोंके घेरनेवाले लोग, जङ्गलमें जाकर, उनके झुण्डको खोजते हैं। इससे पहले यह प्रबन्ध कर जाते हैं, कि उस मैदानमें बहुतसे मोटे मोटे सिक्कड़ फैला देते हैं, और वहां अपना एक या दो पलुआ हाथी भी छोड़ जाते हैं। निदान जङ्गली हाथियोंको घेरकर बन्दूक छोड़ते और डराते हुए, वे उस मैदानके द्वार तक लाते हैं। जङ्गली हाथी जब उस मैदानमें अपनीही जातिके हाथियोंको निर्भय विचरण करते देखते हैं, तो निडर हो, आप भी वहां चले जाते हैं! इसके बाद फाटक बन्द कर दिये जाते हैं, जिससे हाथियोंके आने जानेका रास्ता बन्द हो जाता है। फिर वे घेरनेवाले लोग अपनी बोलीमें चिल्लाकर पलुए हाथियोंको कुछ सुनाते हैं; जिससे पलुए हाथी अपनी सूंड़से सिक्कड़ोंको पकड़ पकड़कर अनेक कौशलसे जङ्गली हाथीको बाँध देते हैं। इस प्रकार वे सब हाथी सिक्कड़ोंसे बँध जाते हैं। यह दृश्य देखनेही योग्य होता है, कि पलुआ हाथी किस प्रकार अपने स्वामीकी आज्ञा पातेही जङ्गली हाथियोंको बाँध देता है। पीछे वे सब हाथी नीलाम कर दिये जाते हैं। प्रत्येक गवर्नरके आनेपर और उसकी इच्छापर यह कारर-

वाई की जाती है। हाथियोंके पकड़नेवाले लोगोंको इस कामके लिये कुछ भी नहीं मिलता! मानों उन बेचारोंपर यह टिकस है, कि इतना परिश्रम अवश्य करें। कभी कभी उनको इनाम भी मिल जाता है।

"मोती"

लङ्काकी राजधानी कोलम्बोसे समुद्रके उत्तर ओर एक खाड़ी इस प्रकार स्थित है, कि उस खाड़ीसे लङ्का टापूकी भूमि पूर्व्वकी ओर रहती है। उस खाड़ीका नाम प्राचीन कालसे मन्नारखाड़ी प्रसिद्ध है। वास्तवमें खाड़ीके किनारे एक बस्ती है, जिसका नाम "मन्नार" है; इसी कारण उस खाड़ीको भी मन्नार खाड़ी कहते हैं। जिस समय लङ्कामें राजाका अधिकार था, उस समय वहां ऐसे मोती प्राप्त होते थे, जो आजकल अप्राप्य हैं। परन्तु जबसे लुटेरों और स्वार्थियोंका राज्य हुआ, तबसे उक्त खाड़ीमें पहलेके समान मोती नहीं मिलते; तो भी दूर दूर तक अनुसन्धान करके अङ्गरेजोंने कुछ ऐसे स्थान ढूंढ़ निकाले हैं, जहां अब भी मोती निकलता है। परन्तु पहलेकी अपेक्षा बहुत कम।

उस स्थानपर, जहां मोती निकाला जाता है, प्राचीन समयके बने हुए दुर्ग, बाजार, और गृह आदिके टूटे फूटे चिन्ह अब भी दीख पड़ते हैं। उनकी बनावट और वर्त्तमान स्थितिको देखनेसे चित्तपर बड़ा प्रभाव पड़ता है, और उस समय यही समस्या याद आती है कि,—

"दिननके फेरते सुमेरु होत माटीको"

परन्तु जिस प्रकार उनके देखनेसे चित्त चिन्तित होता है, उसी प्रकार यह भी निश्चय होता है, कि प्राचीन अधिकारियोंने ये इमारतें इस निमित्त बनवायी थीं, कि जिसमें दूर दूरके देशोंके व्यापारियों और यात्रियोंको, जो मोतीका व्यापार करते हैं, और मोती निकलनेकी ऋतुमें प्रति वर्ष यहां आते हैं, निश्चिन्ततासे वास करनेका सुख मिले। उन पुरानी इमारतोंकी अवस्था देखनेसे यही प्रतीत होता है, कि मानों वे मुंह फैलाये कह रही हैं, कि देखो, प्राचीन अधिकारीगण कैसे उत्साही और प्रजारक्षक थे; उन्होंने कितने व्ययसे यात्रियोंके सुखके लिये हमको तय्यार कराया था; परन्तु आज कलके उद्योगी किन्तु स्वार्थी हाकिमोंकी यह दशा है, कि उसी मैदानमें जिसमें लाखों मनुष्य करोड़ों रुपयेका मोती एकत्र करते हैं, पत्तोंके झोपड़े उनके टिकनेके लिये बनवाये जाते हैं! वे भी सरकारी नहीं होते, वरन् प्रत्येक व्यापारीको अपने लिये निज व्ययसे बनवाना पड़ता है; अथवा कोई बड़ा सौदागर कुछ भूमि ठेकेपर लेकर छोटे छोटे झोपड़े बनवा रखता है। बस अधिकारीकी नीयत तो धनको अपने देशमें ले जानेकी होती है। उसको तो यही चिन्ता रहती है, कि ये सब ज्ञानहीन, चक्षुहीन हो जायँ, तो यह माल हमारे अधिकारमें आ जाय!

प्राचीन स्थान मन्नार खाड़ीपर, अब बहुत कालसे मोती नहीं निकलता है। लङ्काके लोगोंसे सुना गया है, कि जबसे अङ्गरेजोंका राज्य हुआ है, तबसे उस जगह एक भी मोती नहीं मिला है। अन्यान्य स्थानोंसे अङ्गरेजोंके अनुसन्धानसे मोती अबभी निकाला जाता है; परन्तु पहलेके समान उत्तम मोती, ऐसेही कभी भाग्यसे मिल जाता है।

जिन स्थानोंसे अब मोती निकाला जाता है, उनके नाम "मिर्चकटो" और "पूरकोड़म" हैं। दोनों स्थान "मन्नार खाड़ी" सेही सम्बन्ध रखते हैं, किन्तु उसके दोनों ओर स्थित हैं। मिर्चकटोमें किनारेसे बारह मील जलके भीतर तक, और पूरकोड़ममें सोलह तथा बीस मीलतक जलमें जानेपर मोती प्राप्त होता हैं।

मोती निकाले जानेका पूरा पूरा वृत्तान्त यों है, कि जनवरीके प्रारम्भमें उस खाड़ीका अफ्सर (जो अङ्गरेज होता है, और जिसका नाम घाट-कप्तान प्रसिद्ध है) परीक्षा के लिये अपना एक खास अग्निबोट और अपने कुछ कार्य्य-दक्ष कर्म्मचारियोंको ले, उक्त खाड़ीमें जाकर मोती निकल-वाता हैं; और दो चार दिनके उद्योगमें बहुत सी सीपियां लेकर कोलम्बोमें आता है। उनमेंसे आधी सीपियां इङ्गलण्ड (England) भेज देता है, और आधी अपने आफिसमें रख लेता है। विलायत पहुँचकर वे सीपियां काटी जाती हैं,

और उनमेंसे मोती निकाला जाता है। उसी प्रकार कोलम्बो में भी परीक्षा करते हैं। निदान जब इस बातका निर्णय हो जाता है, कि मोती निकालनेमें कितना व्यय होगा, और किस भावसे सीपियां बेची जायँ कि सरकारको भी हानि न हो और व्यापारीगण भी घाटेमें न रहें, और मोती का निकाला जाना निश्चय हो जाता है, तो फेब्रुअरीके आरम्भ तक सब देशोंमें तार द्वारा सूचना देदी जाती है, कि फेब्रुअरीके अन्ततक मोती निकाला जायगा। व्यापारी लोग निर्दिष्ट समयतक नियत स्थानपर आ जाते हैं, और हजारों, लाखों व्यापारी वहां दीख पड़ते हैं। दूर दूरके सौदागर अपने एजेण्टों अर्थात् अढ़तियोंको तार द्वारा मोती खरीदनेकी आज्ञा दे देते हैं।

कोलम्बोसे उन स्थानोंको, जहां मोती निकाले जाते हैं, छोटे छोटे जहाज जाते हैं। प्रत्येक मनुष्यको सात आठ रुपया किराया देना पड़ता है। जो लोग जहाज पर न जाकर सूखे रास्तेसे जाना चाहता हैं, वेभी जा सकते हैं। कोलम्बोसे पचास मील तक घोड़ेकी डाकगाड़ी मिलती है। इसके बाद, चालीस मील तक बैल गाड़ी पर जाया जाता है, और कुछ थोड़ी दूर तक नावमें भी जाना पड़ता है; परन्तु इस प्रकार व्यय अधिक होता है। जो लोग समुद्रसे घबराते हैं, वे इसी मार्गसे जाते हैं।

घाट-कप्तान भी पुलिसको साथ लेकर वहां पहुँचता है। पत्तोंके झोपड़ोंकी हजारों दूकानें और बहुतसे बाजार उस मैदानमें बनाये जाते हैं। तरह तरहकी रोजगारकी चीजें जैसे कपड़े इत्यादि और नित्यके व्यावहारकी अन्यान्य आवश्यक वस्तुएँ लेकर सहस्रों व्यापारी वहां पहुँचते हैं। दूकानें सजायी जाती हैं, और अच्छा खासा मेला लग जाता है।

इस मेलेके बीचमें एक बहुत बड़ा मैदान विशेषकर घाटकप्तानके लिये घेरा जाता है; और उसके चारों ओर दूकानें लगायी जाती हैं। गोतेखोरोंकी सहस्रों डोंगियां भी आकर इकट्ठी होती हैं।

जब सब सामान एकत्रित हो जाता है, और मोती निकलनेका समय निकट आता है, तो सबसे पहले घाट-कप्तान यह काम करता है, कि समुद्रके भीतर उतना स्थान घेर लेता है, जितनेमें मोती निकल सकता है। यह घेरा इस प्रकार बाँधा जाता है, कि लोहे और लकड़ीके पीपे बांधकर समुद्रमें डाले जाते हैं, और लङ्गर रहनेके कारण जलके थपेड़े खाकर वे अपनी जगह भी नहीं छोड़ते हैं। इस प्रकार उतना स्थान घिरा हुआ दीख पड़ता है। अनन्तर डोंगियां जलमें छोड़ी जाती हैं। प्रत्येक डोंगीके साथ एक पुलिसका सिपाही और आठ गोतेखोर रहते हैं। उन डों-गियोंकी संख्या दो सहस्रसे किसी प्रकार कम नहीं होती;

क्योंकि केवल "कोन-काड़ा" से हजार बारह सौ नावें आती हैं; और भी कई स्थान हैं, जहांसे पांच पांच सौसे भी अधिक डोंगियां आती हैं। गोतेखोरोंमें प्राय: "तूती-कोरिन" के रहनेवाले मुसलमान और तामिल जातिके हिन्दू हुआ करते हैं।

विदित हो, कि भारतवर्षकी दक्षिण दिशामें दो स्थान "तूतीकोरिन" और "नागापटन" के नामसे प्रसिद्ध हैं। और भी छोटे छोटे कई स्थान हैं, जो इन दोनोंके बीचमें हैं। बस इन्हीं जगहोंसे गोतेखोर एकत्रित होते हैं। गोते-खोरोंकी संख्या आठ दश सहस्रसे भी बढ़ जाती है, और व्यापारी तथा दर्शकगण तो लाखोंकी गिनतीको पहुँच जाते हैं। फुटकर वस्तुओंकी दूकानें अधिकतासे आती हैं। किसी प्रकारका कष्ट नहीं होता।

इसके अनन्तर घाट-कप्तान नावोंमें पुलिस नियत करके उनको समुद्रमें भेजता है। डोंगियां अपने अपने स्थानपर पहुँचती हैं, और गोतेखोर, गोते लगानेमें लीन होते हैं प्रत्येक नावमें कमसे कम दो गोतेखोर जलमें घुसनेवाले रहते हैं; शेष बाहर बैठे रहते हैं। गोते लगानेवालेकी कमरमें एक रस्सी बाँधी जाती है, और वह जलमें गोता मारता है। नीचे बैठकर पानीकी तहसे सीपियां टटोल के बाहर निकलनेके समय वह अपनी कमरसे बंधी रस्सी को हिलाता है, जिससे ऊपरके लोग सावधान होकर रस्सी

को खींच लेते हैं और जो कुछ बह जाता है, नावमें इकट्ठा करते हैं। इसी प्रकार प्रात:कालसे सायङ्कालके चार बजे तक प्रत्येक नावमें सीपियां इकट्ठी की जाती हैं। चार बजे घण्टे बजाये जाते हैं और झण्डे हिलाये जाते हैं, जिससे नावके लोग हाजिरीका समय निकट जानकर मेलेके स्थान को लौटते हैं। कप्तानके कर्म्मचारीगण बड़ी सावधानी और चेतनतासे डोंगियोंकी सब सीपियां निकालकर उस स्थान्में जमा करते हैं, जो मेलेके बीचमें घाट-कप्तानके लिये बना रहता है। प्रत्येक नावकी ढेरी अलग अलग रखी जाती है। कप्तान हर ढेरीके तीन हिस्से करके दो हिस्से आप ले लेता है, और एक हिस्सा गोतेखोरोंको देता है। यही उनके परिश्रमका बदला है। पश्चात्, गोतेखोर लोग अपने हिस्सेके तीन भाग करते हैं। एक हिस्सा नावके मालिकका और दो हिस्सा सब गोतेखोरोंका होता है। फिर अपने दो हिस्सोंको वे परस्पर बाँट लेते हैं। इसी प्रकार समस्त नावोंके गोतेखोर अपना अपना भाग पाते हैं; और रातके सात बजेतक वे इस कामसे निपट लेते हैं। गोतेखोरोंका यह नियम है, कि वे उसी समय ढेरी लगा लगाकर बाजारोंमें उसी प्रकार बैठ जाते है, जिस प्रकार हिन्दुस्थानके दिहातके बाजारोंमें धीमर लोग मछली बेचने बैठते हैं।

थोड़ी पूंजीवाले बहुतसे लोग प्रायः हाथोंमें टोकरी लिये घूमते दिखाई देते हैं। किसीके हाथमें सीटी है, तो कोई रूमाल हिला हिला कर मोती बेचता फिरता है। तात्पर्य्य यह, कि प्रत्येक मनुष्य अनेक प्रकारसे चक्कर लगाता रहता है, और जिनको इच्छा होती है वे उससे सीपियां मोल लेते हैं। कोई दो आनेकी, कोई चार आनेकी, कोई रुपये की, कोई दो रुपयेकी, कोई दश रुपयेकी, खरीदता है। इस प्रकार ये गोतेखोर और नाववाले तो अपने हिस्सेकी सीपियाँ एक घण्टेमें बेचकर अपने पड़ाव पर चले जाते हैं, और भोजनादिसे निवृत्त हो, मीठी नींदका आनन्द लेते हैं; परन्तु सरकारी सीपियां रातके आठ अथवा नौ बजे तक गिनी जानेके पश्चात् पृथक् पृथक् छोटी छोटी ढेरियाँ लगा-कर (कोई एक सहस्रकी, कोई दो सहस्रकी) उसी समय नीलाम की जाती हैं। घाट-कप्तान पूर्व्वहीसे अनुमान कर लेता है, कि प्रत्येक सहस्र सीपियोंमें कितने मूल्यका मोती निकलेगा; अतएव उसी हिसाबसे नीलाम करता है। नीलाम करनेके समय बड़े बड़े व्यापारी वहां एकत्र होते हैं। अनेक छोटे सौदागर भी एक साथ मिलकर नीलाम खरीदते हैं, और पीछे परस्पर बाँट लेते हैं। जब देखा जाता है कि भाव महँगा है, तो सब व्या-पारी सम्मत होकर एक पैसेका माल भी नहीं खरीदते।

उस समय घाट-कप्तान व्यापारियोंको वाक्‌विहीन देखकर कभी कभी भावमें उचित कमी भी करदेता है। निदान इसी भाँति प्रतिदिन नीलाम हो जाता है। कभी ऐसा भी होता है, कि किसी विशेष कारणसे आज नीलाम न हो-सका, तो दूसरे दिन ताजी और बासी सीपियां मिलाकर नीलाम कर दी जाती हैं। प्रायः देखा गया है, कि एक सहस्र सीपियोंका मूल्य २५) रु० होता है।

इसके अनन्तर जिन्होंने कि थोड़ी सीपियां मोल ली हैं, वे तो हाथोंसे दूसरे दिन प्रातःकालसे लेकर दिन भर में उन सीपियोंको काट काटकर मांसमेंसे मोती निकाल लेते हैं; और वे लोग जिन्होंने गोतेखोरोंसे थोड़ी थोड़ी सीपियां खरीदी हैं, रातहीको अपने भाग्यकी परीक्षा कर लेते हैं, अर्थात् सीपियां काट और मोती निकालकर उसी समय बेच डालते हैं। परन्तु वे लोग, जिन्होंने सहस्रों रुपयोंका मोती खरीदा है, वे पहलेहीसे ऐसा प्रबन्ध कर रखते हैं, कि पत्थरके बड़े बड़े चहबचे तय्यार करा रखते हैं। वे प्रतिदिन जितनी सीपियां खरीदते हैं, उनको उन चहबचोंमें डाल देते हैं, और मीठा पानी भर देते हैं; जिससे तीन चार दिनमें सब मांस सड़ जाता है, और गलकर अलग हो जाता है। मांसके सड़नेसे मोती भी पृथक् हो जाता है। पश्चात् जलको छानकर और कीचड़को साव-

धामोसे धोकर मोती निकाल लिया जाता है, और सब कीचड़ पानी प्रतिदिन फेंक दिया जाता है। इसी प्रकार पुन: दूसरे दिनका काम होता है। मीठे जलमें सीपीका मांस बहुत शीघ्र सड़ जाता है।

सीपियोंके ऊपर और नीचे बहुत सा मांस लगा रहता है। लङ्काके जङ्गली लोग प्राय: उस मांसको खाते हैं। उस मांसके भीतर मोती उत्पन्न होता है, और सीपीकी आयु ज्यों ज्यों बढ़ती है, त्योंही त्यों मोती का आकार भी बढ़ता जाता है। सीपकी हड्डियोंके भीतरी किनारोंसे मिले और मांसमें लिपटे हुए सैकड़ों वरन् सहस्रों मोती उत्पन्न होते हैं। किसी सीपमें दो चार और किसीमें दश, बीस, पचास, सौ और सवा-सौसे भी अधिक मोती निकलते हैं। ये मोती छोटे बड़े सब प्रकारके होते हैं। सीपियोंमें काले, लाल और श्वेत तथा कच्चे मोती भी पाये जाते हैं। जिस भाँति दूधमें पके हुए साबूदानेके दबाने से झिल्ली टूटकर पानी निकल जाता है, उसी भाँति कच्चा मोती भी दबानेसे फूट जाता है।

इस मेलेमें एक बाजारका नाम मोती-बाजार होता है, जहां छोटे व्यापारी प्रतिदिन खरीद बिक्री किया करते हैं। यह खरीद बिक्री नित्य प्रति लाखों रुपयेकी हो जाती है। गोतेखोर लोग प्राय: ऐसा भी करते हैं, कि जो सिपाही

गवर्नमेण्टकी ओरसे उनको नावमें नियत रहता है, उसे कुछ घूस देकर अपनी निकाली हुई सीपियोंमेंसे थोड़ी थोड़ी सीपियां नावहीमें काटकर मोती निकाल लेते हैं और उनको कम मूल्यपर बेचकर रुपया इकट्ठा करते हैं। प्रायः ऐसे गोतेखोरोंसे मोती और सीपियां अल्प मूल्यपर मिल जाती हैं।

चालीस दिन तक इसी प्रकार मेला रहता है; क्योंकि मोती निकालनेके लिये इतनाही समय नियत है। इसके उपरान्त कुछ तो समुद्रमें जलका आवेग बढ़ता है, और कुछ सीपियोंके मांसके सड़नेसे एक प्रकारकी जङ्गली-मक्खी उत्पन्न हो जाती है। उस मक्षिका का रंग काला होता है। वह डङ्क भी मारती है, और जिस स्थानपर बैठती है, वहांसे ऐसी दुर्गन्धि उड़ती है, कि उसे कोई मनुष्य सह नहीं सकता। अगत्या ऐसा होता है, कि समग्र वन इसी जातिकी मक्षिकाओंसे सम्यक् प्रकार आच्छादित हो जाता है, और कोसों तक मक्खियांही मक्खियां दीख पड़ती हैं। उस समय सब मनुष्य वहांसे भाग जाते हैं। यद्यपि मक्षिकाओंके भगानेके लिये कोसों तक ताड़कोल जलाया जाता है, जिसके धुएँसे कुछ मक्खियां मर भी जाती हैं, और भागती भी हैं; परन्तु अन्तमें जीत उन्हींकी होती है।

इस ऋतुके पश्चात् भिन्न भिन्न ऋतुओंमें उस प्रदेशके जङ्गली-लोग उस मैदानकी धूलि छान छानकर सैकड़ों रुपयेके छोटे छोटे मोती निकालते हैं, जो मांसादिके सड़ानेसे गंदले जलमें रह जाते हैं, और बड़े बड़े सौदागर उनको तुच्छ समझकर उनकी ओर विशेष ध्यान नहीं देते। इस प्रकार गरीबोंका काम चलता है। प्रायः जब कभी गवर्नमेण्टकी नीयत बिगड़ती है, तो वहांकी धूलि भी नीलाम हो जाती है!

उस खाड़ीकी रक्षाके निमित्त वहां कुछ सेनाका पहरा रहता है, जिसमें कोई अन्य ऋतुमें आकर मोती न निकाल सके।

बहुतसे व्यापारी जिनके पास रुपयेकी कमी हो जाती है, वे अपने मोतियोंको किसी पात्रमें बन्द करके उसमें ताला लगाकर अपनी मुहर कर देते हैं, और कोलम्बोमें किसी सौदागरके पास उन्हें एक, दो, तीन, चार, पांच मास, अथवा इससे अधिक दिनोंके लिये रेहन रख देते हैं। वे अपने साथ केवल मोतियोंका नमूना लेकर चले जाते हैं, और दूसरे देशोंमें पहुँचकर वहां खरीदार पैदा करके कोलम्बोको लौट आते हैं, और जितने दिनोंके लिये मोती रेहन रख जाते हैं, उतने समयमें रुपया देकर छुड़ा ले जाते हैं। यदि वह समय बीत जाय, तो वह माल अर्थात् मोती इत्यादि आयां गया हो जाता है। उसको रुपया देनेवाला सौदा-

गर अपने काममें लाता है, और उसके मुख्य स्वामीका स्वत्व उसपरसे जाता रहता है। लङ्काका यही नियम है। प्रतिवर्ष फेब्रुअरी महीनेके अन्तमें मोती निकाला जाता है, और निकालनेका समय भी केवल ४० दिन है। इस थोड़े समयमें करोड़ों रुपयेकी सीपियां नीलाम हो जाती हैं। कभी तो यह होता है, कि कोई व्यापारी दो चार बहुमूल्य मोती मिल जानेसे आजन्मके लिये सुखी हो जाता है, और कभी ऐसा देखा गया है, कि लोग अपनी पूंजीमेंसे भी खो बैठते हैं। तथापि वह करुणावरुणालय जगदीश्वर बड़ा दयालु है। लाखों मनुष्योंका जीवन इसी व्यापारके आश्रित है। वर्ष भरके योग्य तो सबको मिलही रहता है।

एकबार, जब कि सीपियोंकी परीक्षा नहीं होती थी, परस्परके हठमें नीलामका भाव चढ़ गया, और जितने सौदागर थे, सबका दिवाला हो गया, मूलका चतुर्थांश भी नहीं मिला। उस समय व्यापारियोंने बड़ी हलचल मचा दी। तबसे सरकारी कर्मचारीगण इस बातका अवश्य ध्यान रखते हैं, कि मूलमें घाटा न आने पावे, अर्थात् तबसे मोती कुछ कम मूल्य पर नीलाम होता है।

इस व्यापारमें सदैव सहस्रों धनवान् धनहीन हो जाते हैं, और सैकड़ों भिक्षुक धनी बन जाते हैं। यह बात सौभाग्य और दुर्भाग्य पर निर्भर करती है।

जब मोती निकाला जाता है, तो सीपियां वहीं पड़ी रहती हैं; उनको कोई नहीं पूछता। उनकी तौल करोड़ों मन होती है, और वे उसी मैदानमें पड़ी रहती हैं। तब गवर्नमेण्ट उस ओर भी ध्यान देती है, और वे किसी सरकारी जहाजमें लादकर इङ्गलण्ड भेज दी जाती हैं, और वहां नीलाम होती हैं। वलायत से उन सीपियोंसे लाखों रुपयेकी वस्तुएँ बनकर देशदेशान्तरको भेजी जाती हैं। यदि कभी गवर्नमेण्टने उनकी ओर ध्यान न दिया, और किसी सौदागरका खाली जहाज कहींको जाता हुआ उस ओर से गया, तो वह उन सीपियोंको जहाजमें भरकर ले जाता है; परन्तु उसको कुछ लाभ नहीं होता; क्योंकि जितना जहाजका भाड़ा होता है, उससे कम मूल्यपर भी वे बिकती हैं। यही कारण उनके पड़े रहनेका है।

"जवाहरात"

लङ्का टापूमें एक स्थान रत्नापुरके नामसे प्रसिद्ध है; जहांकी भूमिमें अनेक प्रकारके बहुमूल्य रत्न प्राप्त होते हैं। वहां प्राय: नदियोंमें अन्य सामान्य पत्थरोंमें मिले हुए जवाहरात मिलते हैं; किन्तु अधिकतर भूमि खोदकर निकाले जाते हैं। सरकारसे एक वर्षका मियादी लाइसेन्स अथवा आज्ञापत्र मिलता है। जो चाहे, वह आज्ञापत्र ले सकता है; परन्तु प्रति एकड़ भूमिके लिये कुछ रु-

पया देना पड़ता है; जिसको संख्या २५से १०० तक होती है। जो व्यक्ति रुपया देकर जमीन ठेकेपर लेता है, उसके लिये सरकारी कर्मचारी जमीन नापकर घेरा बांध देता है। घेरेसे अधिक जमीन कोई खोदने नहीं पाता।

जो व्यक्ति आज्ञापत्र लेता है, वह उस स्थानमें, जहांसे रत्न निकाले जाते हैं, दिन रात उपस्थित रहता है। बहुत से ऐसे संशयात्मक मनुष्य भी हैं, जो धीरे धीरे अपनेही हाथोंसे जमीन खोदकर रत्न निकालते हैं; क्योंकि उनको किसी दूसरे पर विश्वास नहीं होता।

वास्तवमें भूमिमें भूरी मिट्टीकी एक तह मिलती है, बस उसीमें जवाहरात उत्पन्न होते हैं; बल्कि यों समझना चाहिये, कि उस मिट्टीमें पड़े हुए कङ्कड़ पत्थरही रत्न हो जाते हैं। प्राय: केवल एक फुट जमीन खोदनेसे मिट्टीको वह तह, जिसमें रत्न मिलते हैं, निकल आती है; फिर वही तह दस दस बारह बारह फोट जमीन में घुसी चली जाती है। वहांकी मिट्टी बहुत चिकनी होती और उंचाई पर पायी जाती है। छोटे बड़े बहुत तरहके पत्थर उस भूमिमें मिलते हैं। परन्तु सभी (पत्थर) बहुमूल्य नहीं होते। कोई कोई तो साधारण पत्थरोंके समान होते हैं, और कोई ऐसे होते हैं, जिनकी गणना रत्नोंमें की जा सकती है। वहांके रत्नोंकी असल नकलकी पहचान यह है, कि जो असल

होते हैं, वे यदि सूर्य्यकी रोशनीके साम्हने रखकर देखे जायें, तो उनमेंसे भी रोशनी निकलती दिखाई देती है। जब असल नकलका पता लग जाता है, तो फिर उस पत्थरको ठीक बनानेवाले सानपर रगड़कर चमकदार बनाते और साफ करते हैं।

लङ्काका "पन्ना" बहुमूल्य होता है; परन्तु बहुत कम मिलता है। योरपके व्यापारी बहुत दाम देकर उसको ले जाते हैं। इसीसे लङ्काका "पन्ना" अन्य देशोंमें बहुत कम जाने पाता है। हीरा इस देशमें बिलकुल नहीं होता। हां, एक प्रकारका पीलापन लिये हुए पुखराज मिलता है, जिसको वहांके लोग लङ्काका हीरा कहते हैं। वह असल पुखराजकी अपेक्षा अधिक दामों पर बिकता है। इसके अतिरिक्त, नीलम तामड़ा आदि अनेक प्रकारके रत्न वहां प्राप्त होते हैं।

लङ्काकी "चङ्गली" अथवा "सिंहली" जाति, रत्नोंके व्यापारमें बहुत धोखेबाजी करती है। वह नकली रत्न इस ढंगके बनाती है, कि वे असली जान पड़ते हैं।

सहस्रों मनुष्य ऐसे हैं, जो केवल खानि खोदनेमें रात दिन लगी रहते हैं। प्राय: दरिद्र इसीसे बहुत धनाढ्य हो गये हैं; और प्राय: धनवान् दरिद्रावस्थाको प्राप्त हुए हैं।

जिनके पास कम रुपया रहता है, वे सरकारसे रत्नों-वाली जमीनका ठेका न लेकर, प्राय: उन लोगोंसे लेते

हैं, जिन्होंने अधिक जमीनका ठेका ले रखा है, और जो एकबार उसे खोद भी चुके हैं। ईश्वरकी कृपासे फिर भी उस एकबार खुदी हुई जमीनसे रत्न निकलता है।

यह जमीन प्रतिवर्ष खोदी जाती है, और प्रतिवर्ष यहां कुछ न कुछ निकलही आता है। उस प्रान्तमें कई जमींदार हैं, जिन्होंने गवर्नमेण्टसे बहुत दिनोंके लिये उस भूमिका ठेका ले लिया है। इन जमींदारोंने यहीं अपने मकान और बगीचे आदि बनवाये हैं। ये वर्षभरमें लाखों रुपया पैदा कर लेते हैं।

प्राय: उत्तमोत्तम रत्न—रास्तों, जङ्गलों और पहाड़ोंमें आने जानेवाले जङ्गली लोगोंको मिल जाते हैं, जिनको वे ३।४ रुपयेपर बेच डालते हैं। एकबार जङ्गलमें घूमते हुए किसी गँवारने एक पत्थर प्राप्त किया। उस पत्थरको उसने एक मुसाफिरके हाथ बेच डाला। मुसाफिरने उसे १०) पर किसी दूसरे व्यक्तिके हाथ बेचा। इसी प्रकार बिकता बिकाता हुआ, वह पत्थर एक विलायती अङ्गरेजके हाथमें गया, जिसने उसे दस हजार रुपये देकर खरीदा। फिर उस सौदागरने उस रत्नसे बहुत रुपया प्राप्त किया। इन रत्नोंकी पहचानके लिये अभिज्ञता होनी चाहिये। पत्थर साफ करनेका काम "गाली" और "कोलम्बो" में अच्छा होता है।

रत्नापुरको कोलम्बोसे घोड़ेकी डाकगाड़ी जाती है; जो प्रातःकालके ७ बजेसे चलकर रातके ८ बजेतक रत्नापुरमें पहुँचा देती है । आदमी पीछे ५) किराया देना पड़ता है ।

इस टापूके एक स्थानमें सुरमई काली मिट्टी मिलती है; जो चिकनी होती है और लकड़ीके पीपोंमें भरकर लाखों मन विलायतको जाती है । इस मिट्टीकी पेन्सिल बनती है । ऐसा जान पड़ता है, कि वहांपर "सीसे" की कोई भरी हुई खानि हैं; परन्तु "सीसा" (शीशा या कांच नहीं; "सीसा" धातु) यहां नहीं निकलता ।

आदमका पर्वत ।

लङ्कामें एक स्थानपर बहुतसे पहाड़ोंका झुण्ड है, जिसके चारो ओर बड़ाही भयानक और घना जङ्गल है । वहां छोटे बड़े हर तरहके अनेक पहाड़ देख पड़ते हैं । उनमें कोई तो जङ्गली पेड़ोंसे ढँके हैं और कोई सूखे हैं । उन सबके बीचमें एक बहुतही लम्बा चौड़ा और सबसे ऊंचा पर्वत है । इस पर्वतका निचला अर्द्ध भाग तो वृक्षोंसे ढँका हुआ है; पर ऊपरका आधा हिस्सा बहुत साफ और सुथरा है । इसकी ऊंचाई अपने आसपासके पहाड़ोंसे बहुतही अधिक है । इसके शिखरपर एक बड़ीसी पत्थरकी शिला है । उस शिलाके बीचमें मनुष्यके पदचिन्ह बने हुए हैं । उस चिन्हकी ल-

ञ्चाई छ: फीट है। इसके ऊपर लकड़ीका एक छज्जेदार चँदवा भी बना हुआ है।

इस पहाड़को लङ्कावाले 'आदम' का पहाड़ कहते हैं। वहांके लोग इसे बहुत पवित्र मानते और इसकी पूजा करते हैं। मन्नतें मानी जाती हैं और प्रायः पूरी भी होती हैं।

पहाड़की चोटीसे कुछ नीचे आकर बराबर जमीन मिलती है। इस जमीनमें कुछ कोठरियां बनी हुई हैं, जिनमें साधु फकीर रहते हैं। जो लोग उस स्थानको देखने आते हैं, वे प्रायः उन साधु फकीरोंको कुछ खानेकी चीजें दे आते हैं, जिनसे उनका गुजारा होता है।

आदमके पैरोंके चिन्हपर जो कुछ चढ़ाया जाता है, उसका कोई मालिक नहीं है; अर्थात् वहां कोई पुजारी या और कोई रक्षक नहीं है। उन चीजोंको जिसकी इच्छा होती है, वही उठा लेता है। कभी कभी उन साधु फकीरोंमेंसे यदि कोई अपनी कोठरीके बाहर निकला, और उसने वहां कोई चीज पड़ी देखी, तो उसे उठा लिया; या यदि दर्शकोंमेंसे किसीने चाहा, तो उसीने ले लिया। और यदि कोई नहीं आता, तो वे चीजें हवाके झोंके खाकर इधर उधर गिर जाती हैं। अनेक बहुमूल्य रत्न इसी तरह उस पहाड़के पास घूमते हुए प्रायः दर्शक पा जाते हैं। खानि खोदनेवाले जो कुछ माना हुआ रत्नादि वहां चढ़ा जाते

हैं, वह भी इधर उधर गिर जाता है; क्योंकि उस पहाड़पर रात दिन हवा भयानक वेग से चला करती है।

लङ्काकी राजधानी कोलोम्बोसे उस ओर थोड़ी दूरतक रेलगाड़ीकी सवारी मिलती है; जिसका तीसरे दर्जेका किराया १॥) के लगभग होता है। इसके बाद घोड़ेकी डाकगाड़ीपर जाना पड़ता है; जिसका भाड़ा आदमी पीछे छः रुपया है। वह गाड़ी पहाड़ोंके नीचेही नीचे निर्दिष्ट स्थानतक पहुँचा देती है। उसके बाद कुछ दूरतक पहाड़ियों और भयानक जङ्गलोंको पारकर ६ मील सीधे रास्तेसे जाना होता है। पश्चात् ३ मीलतक उसी पहाड़की चढ़ाई ते करनी पड़ती है; तब आदम साहबके पदचिह्नके दर्शन मिलते हैं!

भयानक बनमें भी एक रास्ता बनाया गया है और उसपर रातदिन लोग चलते फिरते रहते हैं; हर समय मेलासा लगा रहता है; इससे उस रास्तेमें किसी बातका भय नहीं है। दर्शकगण अपने साथ खानेकी चीजें लेते जाते हैं; क्योंकि वहां कुछ नहीं मिलता। कोई कोई लोग रातको भी वहीं टिक रहते हैं। वहां सर्दी और हवाका आधिक्य है; पर जब पानी बरसने लगता है, तो बड़ी खराबी होती है। नवम्बरसे फरवरीके अन्ततक वहां जानेमें विशेष सुभीता रहता है।

कोलम्बो (Colombo)

अब लङ्काके नगरोंके विषयमें कुछ लिखते हैं। कोलम्बो यहांकी राजधानी है। यह बहुत बड़ा नगर है; किन्तु हालका बसा हुआ जान पड़ता है। इसकी इमारतें छोटी छोटी और प्रायः तख़्तोंकी बनी हुई हैं; पर अब पक्की भी बनती जाती हैं। एक सड़क समुद्रके किनारे किनारे निकल गयी है; उसपर अंगरेजी दूकानें और होटल आदि बने हुए हैं। उस सड़कपर बिजुलीकी रोशनी भी होती है; शेष नगर भरमें ग्यासके लम्प जलते हैं। इमारतें भी उसी ओरकी अच्छी हैं; और यदि कोई देखने योग्य बाजार है तो वही है। परन्तु वह बाजार सायंकालमें ५ बजतेही बन्द हो जाता है और रविवारको दिनभर बन्द रहता है। प्रायः दूकानें दुमञ्जिली और मकान इकमञ्जिले हैं।

यह नगर ८ मीलमें बसा हुआ है। केवल २ मीलके घेरेमें उस प्रकारकी इमारतें हैं, जैसी भारतवर्षके नगरोंकी होती हैं; बाकी सब अंगरेजी ढङ्गकी हैं; अर्थात् दूर दूरपर बँगले, थोड़ा थोड़ा चमन हर बँगलेके साथ, किन्तु सबका सिलसिला मिला हुआ। थोड़ी थोड़ी दूरपर आवश्यक वस्तुओंकी दूकानें भी बसी हैं।

इसी भांति यह नगर ८ मीलतक चला गया है। इस देशकी मिट्टीके पथरीली तथा लाल रंगकी होनेके कारण,

लाल लाल सड़कों और उनके दोनों ओर लगी हुई हरी हरी घासके देखनेसे चित्त बड़ा प्रसन्न होता है । सड़कें प्राय: बराबर और साफ हैं । इस नगरके बसानेमें इस बातकी चेष्टा की गयी है, कि जहां घनी बस्ती है, वहां सड़कें प्राय: चौड़ी होती हुई निकल गयी हैं । परन्तु सब जगह इस नियमका पालन नहीं हो सका है ।

इस नगरमें १०।१२ ऐसे तालाब हैं, जो आपसे आप बन गये हैं; अर्थात् जिनको मनुष्यने नहीं बनाया है । इन तालाबोंमेंसे एकका घेरा ५ मीलसे किसी प्रकार कम नहीं है । बाकी सब इससे छोटे हैं । सबका जल मीठा और साफ है ।

इन तालाबोंमें बहुतसी छोटी छोटी नावें पड़ी रहती हैं; जिनपर बैठकर बहुत थोड़ा किराया देनेसे मनुष्य तालाब भरकी सैर कर सकता है । यह स्थान बहुतही रमणीक है । यदि समस्त दिन यहीं बीत जाय, तौभी जी नहीं भरता । इन तालाबोंमें पानी पहाड़ी मीठे झरनोंसे आता है और तालाबोंको भरता हुआ, जाकर समुद्रमें मिल जाता है ।

जिस काश्मीरको लोगोंने स्वर्गसे उपमा दी है, उससे भी यहांकी शोभा अधिक है †। सैरके लिये प्राय: मैदान

† हमारी लिखी "काश्मीर-वर्णन" नामक पुस्तक देखिये ।
(गं प्र-गुप्त)

भी छोड़े गये हैं। इन मैदानोंमें नयी रोशनीके बालक युवा और अधेड़ प्रतिदिन शामको गेंद खेलने आते हैं। कोल-म्बोमें पोष्ट आफिस, म्यूज़ियम (अर्थात् अजायब-घर), और बङ्क आदि दो चार सरकारी इमारतें दर्शनीय हैं।

पञ्जाबके सिक्खोंकी पलटन यहां रहती है। उस पलटन की बदली इस टापूके बाहर नहीं हो सकती। एक यह नयी बात देखी गयी, कि पुलिसको यहां नङ्गे पांव रहनेकी आज्ञा है! पूछनेसे मालूम हुआ, कि नङ्गे पांव रहनेसे आदमी तेज दौड़ सकता है; इसीलिये यहांकी पुलीस जूते नहीं पहनने पाती। उनकी वर्दी पतलून वगैरह बानातकी हैं; किन्तु बहुतही भद्दी और खराब! पुलिस-सम्बन्धी जैसा नियम इङ्गलेण्डमें है, वैसाही यहां भी है। चोर चोरी करता हो, यदि मुद्दई नहीं है तो पुलिस उसको देखकर भी नहीं पकड़ेगी। खूनी भागा जाता हो, बिना मुद्दईके पुलिस उस ओर ध्यान नहीं दे सकती! बाजारमें मारपीट लड़ाई झगड़ा कुछ हो, पर यदि मुद्दई न हो तो पुलिससे उसमें हस्तक्षेप करनेसे कुछ मतलब नहीं! इस नियमके कारण हजारों खूनियोंका पता नहीं लगता; सहस्रों चोरियां पच जाती हैं! वहांके जङ्गली जातिके लोग बहुत बदमाश हैं; पर उनमें ऐसी एकता है, कि गवर्नमेण्ट को भी उनसे लाचार होना पड़ता है! अपराधियोंको दण्ड भी बहुत नहीं

दिया जाता। यदि सच पूछिये, तो "अन्धेर नगरी, चौपट राजा" की कहावत चरितार्थ होती है।

प्रारम्भमें ऐसा नियम था, कि कैदियोंको दिन भरमें तीन बार भोजन दिया जाता था! इसके सिवा प्रत्येक कैदीको कुछ मासिक वेतन भी मिलता था; जिससे कैदखानेसे छूटनेके समय वह कुछ मालदार होकर निकलता था! इस रीतिसे और भी उपद्रव होता था। भोजन और रुपयेके लोभसे लोग और भी खून खराबी और दङ्गा फसाद करते थे। यह दशा देखकर बहुतसे प्रतिष्ठित लोगोंने मिलकर सरकारमें अर्जी दी और वह (अर्जी) मञ्जूर भी हुई। अब यह नियम है, कि कैदखानेमें आरामकी अपेक्षा परिश्रम बढ़ाया गया है और कैदियोंको दिनमें एकही बार रोटी और शामको कांजी मिलती है। अब उनको वेतन आदि कुछ नहीं दिया जाता। इससे उपद्रव बहुत कम होगया है।

लङ्काके लाटकी काउन्सिलके भी भारतकी तरह कई प्रतिष्ठित लोग मेम्बर हैं। उनको भी वही अधिकार दिया गया है, जो यहांके मेम्बरोंको है। लङ्कामें किसीसे इन्कमटिकस नहीं लिया जाता। हां, एक यह नियम अवश्य है, कि १८ से ५० वर्ष तककी उमरके लोगोंको आदमी पीछे सालमें केवल २) टिकस देना पड़ता है। सो भी लूले, लँगड़े, अन्धे, अपाहिज आदिसे यह भी नहीं लिया जाता।

कोई कैसाही धनी क्यों न हो, सरकारको उससे कुछ मतलब नहीं।

यहांका रुपया वैसाही होता है जैसा हमारे देशका। उसके एक ओर नारियलके पेड़का चिन्ह रहता है। पर यहां पैसोंकी जगह 'सेण्ट' से काम लिया जाता है। एक रुपये के १०० सेण्ट होते हैं। सेण्ट हिन्दुस्थानी पैसेसे छोटा और हलका होता है। ५०, २५ और १० सेण्टके चांदीके सिक्के भी बने हुए हैं और ५ सेण्टका एक बड़ा पैसा भी होता है। लङ्कामें टकसाल नहीं है। वहांके लिये सब सिक्के मदरासकी टकसालमें बनते हैं।

यहां चोरोंका बड़ा उपद्रव है। चोरोंके कारण यहांके लोग अनेक उपायोंसे अपने मकानके द्वारोंको सुरक्षित रखते हैं। यहांतक, कि कभी कभी द्वारोंको इतना जकड़ रखते हैं, कि उनके खोलनेमें १० मिनटसे भी अधिक समय लग जाता है!

जो पारसल भारतवर्षसे डाकद्वारा लङ्कामें भेजा जाता है, उसपर रुपये पीछे छः सेण्ट कष्टम या चुङ्गी ली जाती है। वहांका पोष्टकार्ड दो सेण्टको मिलता है। उसका आकार हमारे देशके "सरकारी" पोष्टकार्डका सवाया होता है।

कोलम्बोका बन्दरगाह अच्छा नहीं है। यात्रियोंको जहाजसे उतरने चढ़नेमें बड़ा कष्ट होता है। एक तो स-

मुद्रमें बड़ा जोर रहता है, दूसरे उसकी स्थिति ऐसी है, कि जहाजको किनारेतक नहीं आ सकता। जलका जोर रोकनेके लिये बीचमें एक दीवार (ब्रेक वाटरकी तरह) बनायी गयी है, उससे पानीका वेग कुछ कम हो गया है। समुद्रके किनारे गोरी फौजके रहनेके लिये बड़ी बड़ी बारिकें बनी हैं। उधर एक पलटन सिक्खोंकी भी है।

कोलम्बोमें ऐसा नियम है, कि प्रत्येक मकानदार अपने मकानमें एक चौपहल मीनार या ऊँची अटारी अवश्य बनाता है, ताकि उसपर चढ़कर वह प्रतिदिन समुद्र और जहाजोंका दृश्य देख सके। नित्य दो चार जहाज भिन्न भिन्न देशोंसे यहां आकर लङ्गर डालते हैं। फुटकर चीजोंका व्यापार बहुतही अच्छा और लाभदायक होता है, किन्तु अंगरेजी पसन्दकी चीजें अधिक बिकती हैं। यहांके साधारण सौदागरोंका कथन है, कि यदि कोई जहाज केवल ३ घण्टे यहांके बन्दरगाहमें लङ्गर करेगा, तो उसके मुसाफिर ३ हजार रुपया कोलम्बोमें छोड़ जायँगे, अर्थात् इतने रुपयेकी चीजें वे खरीदेंगे। सब चीजें बम्बई और कलकत्तेसे ड्योढ़े दूने और तिगुने दामोंपर बिकती हैं।

रात्रि-समय पुलिसके लोग यहां "जागते रहो" का शोर नहीं मचाते, किन्तु चुपचाप सड़कोंपर टहलते रहते हैं। रातके समय सड़कोंपर जोर जोरसे बातें करना भी

मना है, क्योंकि ऐसा कहा जाता है, कि इससे लोगोंके आराममें क्षति पहुँचती है।

समुद्रके किनारे बहुतही बहारदार स्थान है। मैदान और समुद्रके बीचमें चौड़ी सड़क चली गयी है। इस सड़क पर शहरके योरपियन तथा देशी लोग सैरके लिये गाड़ियों पर चढ़कर अथवा पैदलही जाया करते हैं। सड़कके किनारे किनारे थोड़ी थोड़ी दूरपर बेञ्च या तिपाइयां पड़ी हैं। यह सड़क सन् १८५७ ई॰ की बनी हुई है। इसपर एक जगह एक पत्थर लगा है, उसी पत्थरमें यह तारीख खुदी है। एक बहुत बड़ा होटल समुद्रके किनारे बस्तीसे कुछ अन्तरपर, बना है। यह इमारत भी देखने योग्य है। प्रायः योरपियन यहीं आकर टिकते हैं।

कोलम्बोमें एक अजायबखाना भी है। यह भी एक अत्यन्त रमणीक स्थानमें बना है। लङ्काकी जितनी वस्तुएँ हैं, सब यहां लाकर संग्रह की गयी हैं। सहस्रों प्रकारके पशु, पक्षी, जीव, जन्तु लाकर बन्द किये गये हैं; हजारों तरहके रत्नादिक खोज खोजकर लाये गये हैं। लङ्काके जङ्गली मनुष्योंकी मिट्टीकी मूर्त्तियां सचमुचकी जान पड़ती हैं। एक राजाके दरबारकी नकल बहुत अच्छी बनाकर रखी गयी है। यह राजा इसी देशका अर्थात् लङ्काहीका था। इसने बहुत दिनों तक अंगरेजोंके साथ युद्ध किया था।

अन्तमें बड़ी कठिनाईसे पकड़कर मारागया था। राजाके मुसाहिबोंका पहनावा जामा अंगरखा और पगड़ीका है।

अंगरेजोंसे पहले लङ्कामें डच लोगोंका अधिकार था। उनके समयकी बहुतसी बातें अबभी यहां देख पड़ती हैं। कई स्थानोंमें घण्टे लगाये गये हैं, जो निर्दिष्ट समयोंपर बजाये जाते हैं। एक स्कूल विशेषकर उन्हीं लोगोंके लिये है। यहां डचोंकी बस्ती भी अधिक है। उनका एक दुर्ग भी था; पर समुद्रके किनारे रेल निकाली गयी है, इसलिये वह तोड़ दिया गया है।

नगरसे ४ मीलपर बौद्धोंका बड़ा मन्दिर है। इस मन्दिरमें भी, रङ्गून * के बड़े मन्दिरकी तरह महात्मा बुद्धकी विशाल मूर्त्ति स्थापित है। इस मूर्त्तिकी ऊँचाई ४० फीटके लगभग होगी। आसपास और भी अनेक मूर्त्तियां हैं।

समुद्रके किनारे किनारे कहीं कहींपर तोपें लगायी गयी हैं। इन तोपोंसे शत्रुओंके जहाज निकट आनेसे रोके जा सकते हैं। मन्दिर और मसजिदें बहुत कम हैं, पर गिर्जे गली गली और रास्ते रास्तेमें बने हुए हैं।

बम्बईकी ओरसे बड़े बड़े व्यापारी आकर यहां व्यापार

---

* रङ्गूनका हाल हमारी लिखी "रङ्गून-यात्रा" नामक पुस्तकमें देखियेगा। (गं० प्र० गुप्त)

कर रहे हैं। उनके बड़े बड़े कारखाने हैं। अन्नका व्यापार बहुत उन्नत अवस्थामें है। करोड़ोंका हेरफेर हुआ करता है।

यहां आनेवाले यात्रियोंके लिये अंगरेजीका जानना अत्यन्त आवश्यक है। बिना अंगरेजी जाने यहां कोई बात भी नहीं पूछेगा! हिन्दुस्थानकी बनी हुई वस्तुओंकी यदि यहांके अंगरेजी बाजारमें दूकान खोली जाय—और अच्छा प्रबन्ध किया जा सके तो बड़ी प्राप्ति हो सकती है। कारण यह, कि समस्त संसारके लोग यहां आते जाते रहते हैं। यदि नमूनेके लिये भी थोड़ी थोड़ी चीजें खरीदें, तौभी बहुत है। हमारी समझमें, यहां हिन्दुस्थानी चीजें बड़े आदरसे बिक सकती हैं। कोलम्बो गर्म्म स्थान है, पर यहां लूहकी तेजी नहीं है।

कैण्डी (Candy)

कैण्डी एक पहाड़ी बस्ती है। जिस प्रकार भारतके उत्तरी और पश्चिमी सीमापर काबुलका पहाड़ी देश है, उसी प्रकार लङ्कामें यह भी अत्यन्त दुर्गम और पथरीली जगह है। पर यह सीमापर न होकर मध्य लङ्कामें है। रास्ता बड़ाही भयानक और ऊबड़ खाबड़ है।

हम पहले कई स्थानमें लिख चुके हैं, कि योरपियनोंसे पहले इस टापूके अधिकारी डच लोग थे। सो उनका अधिकार उस समयसे था, जबसे भारतमें पुर्त्तगालोंका आग-

मेंन आरम्भ हुआ; अर्थात् सम्भवतः सन् १४०० ईसवीमें। अंगरेजोंने इसे १८ वीं शताब्दीके अन्तमें लिया। फिर भी सब भीतरी स्थानोंको न डच पा सके न अंगरेज। हां, समुद्रके किनारे किनारेके देशोंपर अंगरेजोंका आधिपत्य अवश्य जमा; किन्तु भीतरी देश चङ्गली जातिके राजाओंहीके हाथमें रहे। उन राजाओंने इसी "कैण्डी" को अपनी राजधानी बनाया। बहुतही दुर्गम होनेके कारण बहुत दिनों तक यह स्थान अजेय रहा। सन् १८३० ई० में सिङ्गापुरके कुछ लोगोंकी सहायतासे अंगरेजोंने इसे प्राप्त किया।

कोलम्बोसे कैण्डी प्रायः ७५ मीलके अन्तर पर है। बराबर रेलगाड़ी जारी है। किराया तीसरे दर्जेका दो रुपया है। यहांकी रेल हमारे हिन्दुस्थानकी रेलोंकी अपेक्षा कुछ चौड़ी है। बड़ी लाइनकी चौड़ाई छः फीट है। गाड़ियां इण्डियन मिडलैण्ड रेलवे (Indian Midland Ry.) के ढंगकी हैं; किन्तु उनकी खिड़कियां कुछ ऊंची हैं; इससे बाहरका दृश्य देखनेमें कुछ कठिनाई पड़ती है।

यह पहाड़ी देश बहुतही ठण्डा है। इसकी ठण्डक और यहांका जलवायु हिन्दुस्थान, ब्रह्मदेश, काश्मीर—और तो क्या, सीलोनके भी और सब दूसरे स्थानोंकी अपेक्षा अधिक उत्तम है। यहां रहनेसे शरीर हृष्ट पुष्ट होता है; मजबूत होता है, और मुस्तैदी आती है। दार्जिलिङ्ग, मसूरी,

नैनीताल, आबू, शिमला आदि सब स्थान इससे निचाईमें स्थित हैं। प्रकृतिने इस स्थानको बड़ाही रमणीक और बहारदार बनाया है। इसकी प्रशंसा करना कविकी कल्पनासे बाहर है; अतएव इसकी तारीफमें हम विशेष कुछ नहीं लिख सकती। पहाड़ीपर अंगरेजी ढंगकी बस्ती है। जगह जगह बँगले और छोटे छोटे बगीचे बने हुए हैं। आवश्यक वस्तुओंकी खरीद बिक्रीके लिये बाजार और दूकानें भी मौजूद हैं। मानो शहरके ऊपर पहाड़पर एक दूसराही नगर बसा हुआ है। सच पूछिये तो नीचेका नगर भी एक पहाड़की चौरस भूमिपर बसा है। उसके चारो ओर ऊंचे ऊंचे पर्वत हैं। शहरकी सड़कें साफ और चौड़ी हैं। इमारतें प्रायः इकमञ्जिली हैं। बाहरसे आये हुए लोगोंकी भीड़भाड़के कारण हरदम एक मेलासा लगा रहता है।

नगरके पूर्व्व ओर एक बहुत गहरा तालाब है। उसकी गहराईका आजतक किसीको पताही नहीं लगा। अब उसके चारो ओर सड़कें बन गयी हैं; किन्तु पहले वहांकी जमीन ऊंची थी। उत्तर ओर बौद्धोंका एक मन्दिर है। उस मन्दिरमें गुम्बदके भीतर गौतम बुद्धका एक दांत और उनके थोड़ेसे बाल अबभी रखे हैं। यह दांत डेढ़ इञ्च लम्बा है! हर साल अगस्तके महीनेमें इस तालाब और मन्दिरके निकट मेला लगता है। गौतम बुद्धके उस दांत और अन्य

कई चीजोंको हाथियोंपर रखकर आठ दिनतक नगरमें घुमाते हैं। असंख्य मनुष्य इकट्ठे होते हैं। उस त्योहारका नाम "प्रोरा" प्रसिद्ध है।

उस मन्दिर और तालावकी चारदीवारी सहस्रों वर्ष पूर्वकी बनी है। ऐसी जनश्रुति है, कि इस तालावके गर्भमें बहुतसा धन पड़ा हुआ है। लोग कहते हैं, कि यहांके प्राचीन राजाका सब धन इसीमें है; क्योंकि जब उसने राज्यको अपने हाथसे जाते देखा, तो सब धन और रत्नादि इसी तालावमें डलवा दिया। उस समय सत्वीत्वरक्षाके लिये राजाकी रानीने भी अपने शरीरके साथ एक पत्थर बांधकर अपने तईं उसमें डुबा दिया था। अस्तु।

यह स्थान ऐसा दुर्गम और सुदृढ़ था, कि इसे कोई भी जीत नहीं सकता था। अंगरेजोंने जो इसे पाया, तो उसका कारण यह है, कि यहांके लोगोंके पास अस्त्रादि कुछ भी नहीं था।

जो हो; कैण्डीमें प्रायः हाकिम और धनवान् लोग प्रकृतिकी छटा देखने तथा वहांके उत्तम जलवायुका सेवन करनेके लिये जाया करते हैं। यह बात यहांके लिये साधारणतः प्रसिद्ध है, कि कहींसे कैसाही रोगी यहां क्यों न आवे, वह यहां आकर अवश्य आरोग्यता लाभ करेगा। वास्तवमें यहांकी हरियाली और बहार बयानसे बाहर है। जो एक

बार इस स्थानको देख लेगा, उसकी इच्छा कभी यहांसे हटनेकी न होगी। जगह जगह साफ़, हलके और मीठे पानीके झरनें शोभा देते हैं। प्रायः उनमें ऐसे भी हैं, जिनमें स्नान करनेसे तत्काल शरीरमें विशेष बल आन पड़ने लगता है। इसका कारण यह हो सकता है, कि उनका पानी बड़े बड़े जङ्गलों, जड़ी बूटीके स्थानों और जवाहिरात की खानोंमेंसे बहता हुआ आता है।

गाली (Galle)

लङ्का टापूमें यह बहुत पुरानी बस्ती है। प्राचीन कालसे यह स्थान बन्दरगाह रहा है। डचों और अंगरेजों दोनोंके समयमें देशादेशान्तरके जहाज आकर यहां लङ्गर करते थे; किन्तु जबसे कोलम्बोकी उन्नति की गयी है, तबसे यहांकी रौनक कम हो गयी है। अब केवल व्यापारके जहाज यहां आया जाया करते हैं। यहां अनाजकी बड़ी भारी मण्डी है। भारतवर्षके कच्छकी ओरके व्यापारी यहां अधिक हैं। जवाहरातकी खरीद बिक्री भी गालीहीमें अधिक होती है। यहांके लोग जमींदार भी हैं। उनके अधिकारमें अधिकतर नारियलके बगीचेही हैं। कोलम्बोसे गालीतक रेल गयी है। किराया ठीक याद नहीं;—शायद डेवढ़े दर्जेका २/) है। कोलम्बो और गालीमें उतनाही अन्तर है, जितना कैण्डी और कोलम्बोमें; अथवा यों कहना चाहिये, कि कोलम्बो—गाली और कैण्डीके मध्यमें है।

लङ्का टापूमें बड़ी कठिनाईसे रेल निकाली गयी है। ऊंचाई निचाईका इतना आधिक्य है, कि देखनेसे बड़ा आश्चर्य होता है। हमारी पुस्तकको पढ़नेवालोंमेंसे जो महाशय बम्बई और पूनाकी ओर गये होंगे, उन्होंने ग्रेट इण्डियन पेनिन्सुला रेलवेमें केवल दो दुर्गम स्थानोंमें रेलकी लाइन देखी होगी।—एक बम्बईसे पूनाके बीचमें; दूसरी कसार और इगतपुरीके मध्यमें। पर लङ्कामें सर्वत्र दुर्गम और भयानक स्थानोंहीसे होकर रेल निकली है। सैकड़ों घाटियां, सहस्रों गड्ढे और पचासों नदियां पार करनी पड़ती हैं। किराया हिन्दुस्थानकी अपेक्षा कुछ अधिक है।

यहांपर डचोंके समयका एक बहुत अच्छा किला अबतक वर्त्तमान है। उसकी बनावट आगरेके किले की भांति है। उसपर लगी हुई प्राचीन समयकी तोपें अभीतक देख पड़ती हैं। डचोंकी और भी अनेक प्राचीन इमारतें टूटी फूटी और गन्दी अवस्थामें पड़ी हैं।

गालीका जलवायु कोलम्बोकी तरह कुछ गर्म्म है। हरियाली और जङ्गलका आधिक्य है। यहां प्रधानत: अनानास आम और बढ़हलकी उत्पत्ति अधिक होती है।

फुटकर बातें।

प्रतिवर्ष वैशाष मासकी पड़िवाको चङ्गली जातिके लोगोंमें एक बड़ा भारी उत्सव होता है। उस दिन कोलम्बो

और जहां जहां इस जातिके लोग बसते हैं वहां वहां बड़ा समारोह होता है। कई दिन पहलेसे तय्यारियां की जाती हैं। शहर भरमें रास्तेके दोनों ओर हरे हरे वृक्षोंकी डालें काट काट कर लगायी जाती हैं। रातको रोशनी भी खूब होती है। चीनके ढँगकी कागजी कन्दीलें लगायी जाती हैं। स्वयं वहांवाले भी सैकड़ों तरहकी सजावटकी चीज बनाते हैं। रातके बारह बजेतक यह रोशनी होती रहती है। सब स्त्री और पुरुष उस दिन अच्छे अच्छे कपड़े पहनते हैं। तात्पर्य्य यह, कि खासा आनन्द मनाया जाता है।

कोलम्बोमें बौद्धोंके बहुतेरे मन्दिर हैं। उन मन्दिरोंमें बौद्ध लोग जाकर पूजनैत्यादि करते हैं। और सम्प्रदायवाले भी वहां जा सकते हैं।

मलयद्वीप (Maldives)

सीलोनके उत्तर पश्चिम और बम्बईके दक्षिण पश्चिम कोणमें छोटे छोटे सहस्रों द्वीप वर्त्तमान हैं। इन सबमें प्रधान "मलयद्वीप" नामक एक टापू है, जिसे अंगरेज लोग मालडाइवस कहते हैं।

इन टापुओंमें बहुतोंमें बस्ती है और बहुतसे एकबारही उजाड़ और सुनसान हैं! पर प्रायः सबमें नारियलके पेड़ बहुलतासे उगे हुए हैं। यहांका नारियल छोटा और मीठा होता है और इसमेंसे प्रायः एक प्रकारका जमा हुआ घी निकलता है, जो तेलकी जगह काममें लाया जाता है।

इन टापुओंमें कोई टापू तो एक मीलके घेरेमें हैं; कोई इससे कुछ छोटे या कुछ बड़े हैं; पर कोई ऐसे हैं, कि जलमेंसे केवल पहाड़की चोटीही चोटी दिखाई देती है। कोई कोई दो चार मीलके भी हैं।

अस्तु मलयद्वीपही इन सबमें बड़ा और प्रधान है। यहांके लोग सांवले हैं। वे मछली चावल और नारियल खाते हैं। वे तख्तोंसे रहनेके लिये मकान बनाते हैं। यहां वृष्टि और तूफानकी अधिकता हैं। उनकी नावें बड़े बड़े पेड़ोंको खोखल करके बनायी जाती हैं। रस्सियां नारियलकी जटाकी होती हैं। यहां चन्दन भी बहुत होता है।

लङ्काके निकटवर्त्ती अन्य टापुओंका वृत्तान्त किसी दूसरे समय लिखनेकी चेष्टा करेंगे। देखें, हमारे पाठकगण इसे पढ़कर क्या राय देते हैं।

समाप्त।

नोट—हम एक ऐसी पुस्तक भी संग्रह कर रहे हैं, जिसमें सीलोन, सिंगापुर आदि टापुओंकी भाषा और साथही उसका हिन्दी और अंगरेजी अनुवाद दिया जायगा। उसके पढ़नेसे हमारे पाठकोंको वहांकी भाषाका थोड़ा बहुत ज्ञान अवश्य प्राप्त होगा। उस कोषका क्रम इस प्रकार होगा,—

चङ्गली (लङ्काकी भाषा)	मलाई (सिंगापुरकी)	टामिल (लङ्काकी)	हिन्दी।	अंग्रेजी।
कुहुमदे	आपा खबर	इन्ना-श्रीकम	आपका मिजाज कैसा है	How do you do.

ऐतिहासिक पुस्तकें।

लोग प्रायः पूछा करते हैं, कि हिन्दीमें कौन कौनसी ऐतिहासिक पुस्तकें छपी हैं। हमलोग हिन्दीके सब ऐतिहासिक ग्रन्थों का नाम नहीं जानते; अतएव केवल उन पुस्तकोंके नाम दाम प्रकाशित करते हैं जो हमारे यहां मिल सकती हैं,—

सतीचरित्र संग्रह (एक नागर द्वारा लिखित)	१)
नीलदेवी नाटक (भारतेन्दु द्वारा लिखित)	⁄)
प्रताप नाटक (बाबू राधाकृष्ण दास लिखित)	॥)
कृष्णाकुमारी नाटक (बाबू रामकृष्ण वर्म्मा लिखित)	॥)
वीरनारी नाटक (बा० रामकृष्ण वर्म्मा लिखित)	।⁄)
अकबर उपान्यास (बा० रामकृष्ण लिखित)	॥)
कुँवरसिंह उपन्यास (बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्त लिखित)	॥)
जया उपन्यास (बाबू कार्त्तिकप्रसाद लिखित)	॥)
जीवनसन्ध्या उपन्यास (मुंशी उदितनारायण लाल लि०)	॥)
ठगवृत्तान्तमाला (बाबू रामकृष्ण लिखित)	२॥)
तारा उपान्यास (गोस्वामी श्रीकिशोरीलालजी लि०)	१॥)
तांतियाभील उपन्यास (पं बलदेवप्रसाद मिश्र लिखित)	⁄)
दीपनिर्वाण (मुंशी उदितनारायण लाल लिखित)	॥)
नूरजहां (बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्त लिखित)	।)

पूनामें हलचल (बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्त लिखित)	।=)
बङ्गविजेता (बाबू गदाधरसिंह लिखित)	१)
वीरपत्नी (बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्त लिखित)	।-)
वीरजयमल (बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्त लिखित)	॥)
राजसिंह (पं प्रतापनारायण मिश्र लिखित)	॥)
शीरीं फरहाद (बाबू हरिकृष्ण जोहर लिखित)	≡)
लैले मजनू (बाबू देवकीनन्दन खत्री लिखित)	=)
पद्मावत (मलिक मु० जायसी कृत)	१॥)
आर्य्यचरितामृत (बाबू राधाकृष्ण दास लिखित)	-)
पन्नाराज्यका इतिहास (बा० गङ्गाप्रसाद गुप्त लिखित)	≡)
हम्मीर (बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्त लिखित)	=)
आनन्दीबाई (बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्त लिखित)	।=)
कनककुसुम (गोस्वामी श्रीकिशोरीलालजी लिखित)	।)
राजदर्पण काशीका इतिहास (एक बङ्गाली लिखित)	२)
महाराज शिवाजी बाबू कार्त्तिकप्रसाद लिखित)	।)
विक्रमादित्य (बाबू कार्त्तिकप्रसाद लिखित)	-)
अहिल्याबाई (बाबू कार्त्तिकप्रसाद लिखित)	=)
विहारदर्पण (एक लेखक)	≡)
विहारीवीर (बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्त लिखित)	=)
मीराबाई (बाबू कार्त्तिकप्रसाद लिखित)	=)

मैनेजर "भारतजीवन" काशी।